बालक को विनयवान एवं ...ान बनाने के लिए

...TH ART

...र सिंचन

1

Name: IESHA A Shah

Std: I Div: K Roll No.: 38

Subject: Revise book

Children's Academy School

© Barbie

Sticker Bazaar

(English / *हिन्दी त्रिमासिक*)

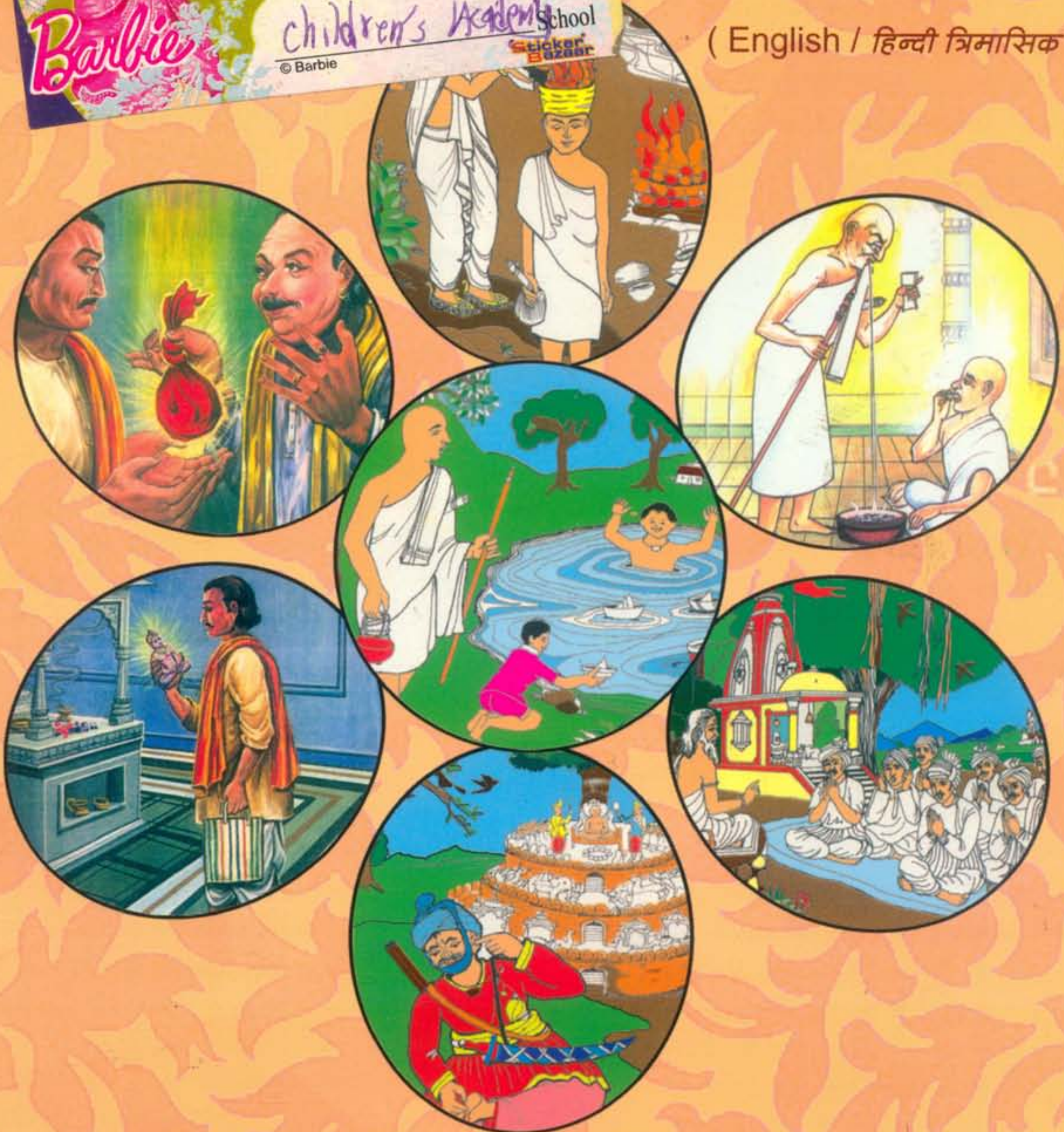

अनुयोगाचार्य श्री नयचंद्रसागरजी म.सा. के शिष्य

मुनि श्री सुमतिचंद्र सागरजी म.सा.

Daily Routine of Ideal Child

आदर्श बालक की दिनचर्या

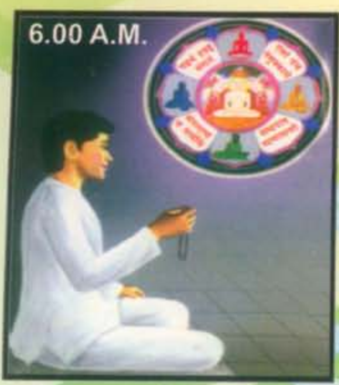

नवकार मंत्र स्मरण

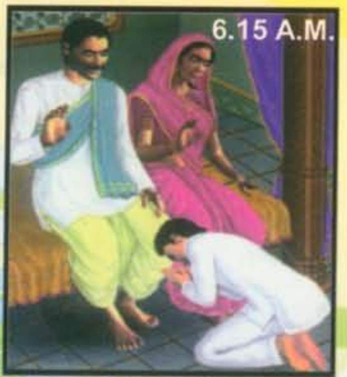

मातापिता को वंदन

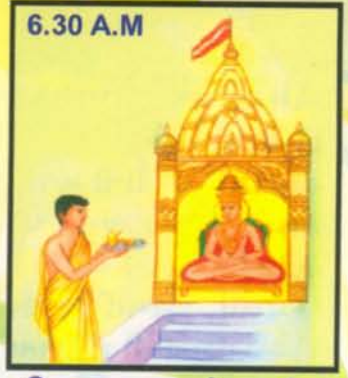

वीतराग प्रभु के दर्शन

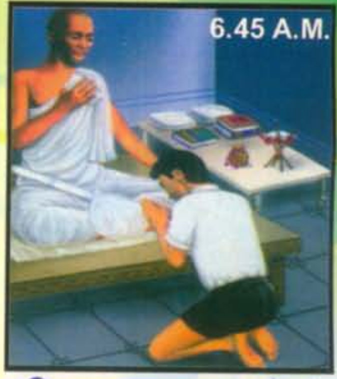

त्यागी गुरुमहाराज को वंदन

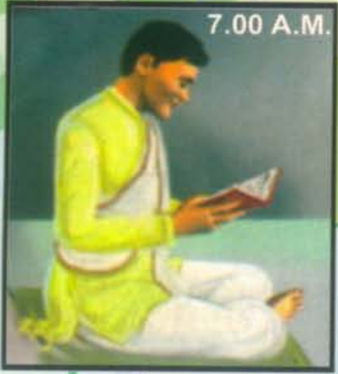

धार्मिक ज्ञान

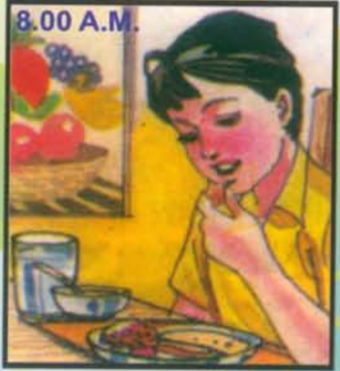

नवकारशी

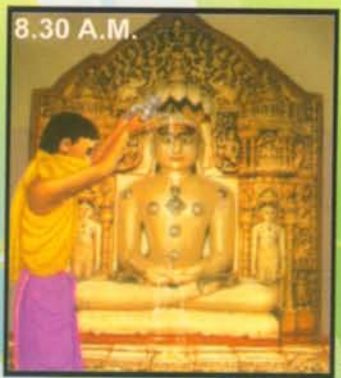

प्रभु की पूजा

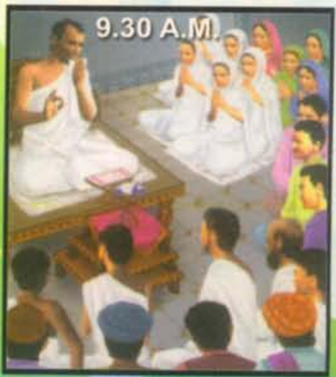

वीतराग वाणी का श्रवण

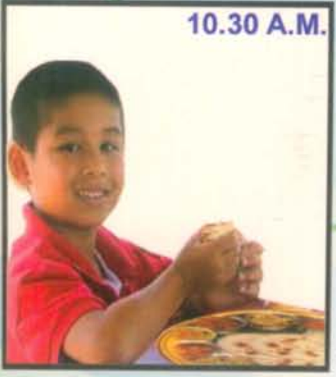

दोपहर का भोजन

स्कुल जाना

दोस्तो के साथ खेलकुद

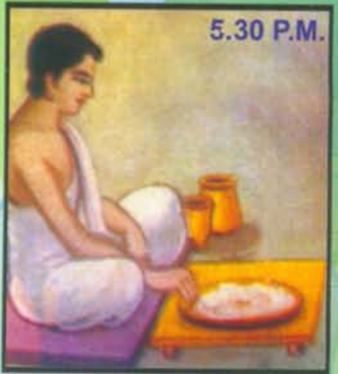

सात्त्विक भोजन

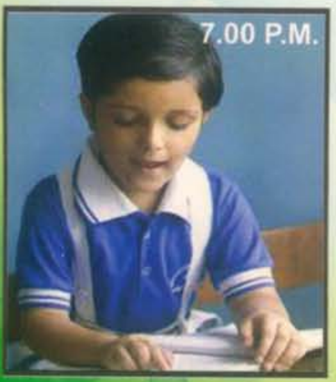

गृहकार्य (पढाई)

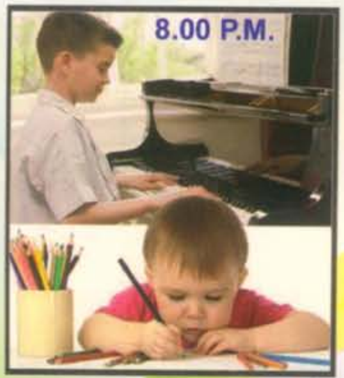

संगीत एवं चित्रलेखन की साधना

वडील के साथ वार्तालाप एवं सेवा

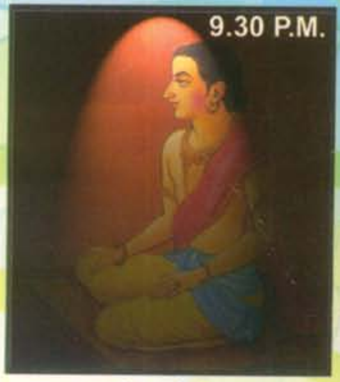

रात को सोते समय नवकार स्मरण

बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

JAINISM WITH ART

कला द्वारा संस्कार सिंचन

(English / हिन्दी त्रिमासिक)

Year 1st | Edition 1st | (Continuous Edition 1st)

ॐ

એકધારી ગતિએ વિકસતા ભૌતિકવાદમાં આજના બાળકો ખેંચાઈ રહ્યા છે. આવા સમયે કુમળા બાળ-માનસમાં શાસન કે અધ્યાત્મના બીજારોપણ થયા હશે તો ભાવી જીવન ઉન્માર્ગે કુસંસ્કારોથી અટકી શકશે...

આવાજ શુભ વિચારોએ ભાવી જિનશાસનના યશોજ્જ્વલ ઇતિહાસ માટે યુવા મુનિશ્રી સુમતિચંદ્રસાગરજી મ. એ પ્રયત્ન આદર્યો છે.

બાળ + સંસ્કારી બુદ્ધિવાન અને શાસન-સમૃદ્ધ બની પોતાના અધ્યાત્મ જીવનની શરૂઆત કરે અને મુનિશ્રીનો પ્રયત્ન સાર્થક બને એજ મંગલકામના.

નયચંદ્રસાગર

–: प्रेरणा :–

वर्धमान तपोनिधि, शासन प्रभावक

अनुयोगाचार्य श्री नयचंद्र सागरजी म.सा.

–: मार्गदर्शक :–

मुनि श्री ऋषभचंद्र सागरजी म.सा.

–: संयोजक :–

मुनि श्री सुमतिचंद्र सागर म.सा.

–: प्रकाशन :–

पूर्णानंद प्रकाशक

भूपेन्द्रभाई राठोड
२०१, कुंथुनाथ एपार्टमेन्ट, सर्वोदय नगर,
मुलुन्ड (वे), मुंबई – ४०० ०८०.
मोबाईल : ९८२०२९३२६९

धरणेन्द्रभाई शाह
७१२, धरती, ईन्द्रप्रस्थ कॉम्पलेक्स,
सत्य नगर, बोरिवली (प.), मुंबई–९२.
मोबाईल : ९८९२५५१५९०

चिंटुभाई शाह
३८/४०, आशिष बिल्डींग, रुम नं. १५,
१ला माला, बाबु गेनु मार्ग, मुंबई–२
मोबाईल : ९३२४४४०१८१

सूचना :– किसी कोभी इन पुस्तको की प्रभावना करनी हो तो उपरोक्त एड्रेस पर संपर्क करे !
१ से ४ अंक की परीक्षा ली जायेगी इसलिए पुस्तक संभालकर रखे !

Instruction :- an Exam will conducted regardinf 1 to 4 Edition joining so please keep this book safly

Jay Jinendra Kids,

Your wait for this book is over and I hope you are excited holding this book in your hand.

This book is not like any other ordinary book. It's a very special book.

It teaches you important lessons which will help you to improve your life and make it more happier.

This book is divided into chapters you will have to colour one chapter (picture) every week.

Read the chapter carefully, understand it and try to inculcate the message it gives you.

Every chapter is Worth knowing and will give you a valuable message.

I would like to say one thing in end. Make your life such that it will be an inspiraton for others. So other can benefit from it.

Enclosed here is a form in this book.

If your friends or cousins has still not yet fill the form, please Xerox the form and give it to them and send it to the address mentioned on the book.

Written by
Purnanand Prakashan

प्यारे बच्चो !

पुस्तक हाथ में आते ही आपको खुब आनंद हुआ होगा । कितने दीन के इन्तजार के बाद यह पुस्तक प्राप्त हुई। यह पुस्तक सभी पुस्तको की तरह कोई सामान्य पुस्तक नही है बल्की जिवन मे सुखी एवं गुणवान् कैसे बना जाए उसकी चावीयाँ इस पुस्तक के अंदर है। हर सप्ताह के अंदर एक चित्र को रंग भरना । कथा पढने के बाद आपके लिए कथा के नीचे लिखी हुई चावीयाँ अपने जीवन में उतारने के कोशिश करना। जिसके कारण अपना जीवन सुख-शांति पूर्वक समाप्त हो। जीवन में कैसे भी संकट-आफत आए फिर भी निश्चित कैसे रहना वो ये पुस्तिका सिखाएगी। और जनरल प्रश्न, समस्या उकेल, एवं हितवचन वह भी ध्यान से पढना ।

बस और ज्यादा क्या कहु? आप उम्र से भले छोटे मगर दीमाग से बडे हो। अपना जीवन ऐसा होना चाहिए, जो अपना जीवन देखकर कुछ अच्छे बनने की प्रेरणा ले । अपना और उसका कल्याण हो वोही प्रभु को मंगल प्रार्थना ।

आप के साथ एक फोर्म भेजा है, अगर आपके कोई मित्र या भाई को फोर्म भरना बाकी है तो उसकी झेरोक्स निकालकर सबको दी जाए और नीचे लिखे हुये पते पर संपर्क करे। अच्छा इन्सान उसे ही कहते है जो खुद की चिंता और दुसरो की भी चिंता करे ।

लि. **पूर्णानंद प्रकाशन**

Please use very light crayons only.

कृप्या हलके रंग का उपयोग करे!

My Pledge

- I am a Shravak
- I will believe in Arihant God only.
- I will only follow Panchmahavrat Sadhu.
- I will believe True religion of Vitrag Bhagwan dharma.
- I will always go in Vitrag Bhagwan Temple and Upashray.
- For Shravak comfort life, I will never take Badha of Dev-Devi.
- I will not follow Parva Vrata shown by other Dharma Dev-Devi.
- I will always follow Parva rules shown by Vitrag Bhagwan.
- I will not break the rules of Vitrag Bhagwan in any work.
- I will always behave politely with elders, brother, sister etc.
- Those who follow this rules will get heaven early.

मेरी प्रतिज्ञा

- में श्रावक हुं ।
- में अरिहंत देव को ही मेरे भगवान मानता हुं ।
- में पंचमहाव्रतधारी साधु को ही मेरे गुरु मानता हुं ।
- में वीतराग देव के धर्म को ही सत्य धर्म मानता हुं ।
- में वीतराग देव के देरासर - उपाश्रय में प्रतिदिन जाऊंगा ।
- में सांसारिक सुखो के लालच से कोई भी देव की बाधा नहि रखुंगा ।
- में अन्य धर्म के देव-देवीओने दिखाए हुए व्रत-पर्व नही करुंगा ।
- में वीतराग देव ने बताये हुए पर्व - नियम की आराधना करुंगा ।
- में वीतराग की आज्ञा के विरुद्ध कोई काम नहीं करुंगा ।
- में वडील-स्वजन, भाई-बहन के साथ विनय-विवेक रखुंगा ।
- इस प्रतिज्ञाओ का पालन करने वाला आत्मा जल्द ही मोक्ष की ओर जाता है ।

The Ascetic Aimutta

One day, some children were playing in the city of Rajgrihi. At that time, Gautam Swami, a great ascetic happened to pass by that city. A bright boy approached Gautam Swami and said "Maharaj ! you are travelling barefoot in this hot sun. How amazing! Gautam Swami explained the boy that principles relating to sadhu dharma and told him that Jain sadhu do not use footwear. The boy was fascinated and requested him to visit his place and receive Gochari (food). Gautam Swami visited his place. Aimutta's mother gave sweets to the sadhu. Gautam Swami left the place and Aimutta followed him. Seeing that the ascetic zoli of Gautam Swami was heavy, Aimutta said, "Maharaj! kindly give me that zoli. I will carry it. Gautam Swami smiled and said "No, No you should not carry this zoli. It can be carried only by ascetics.

In this case Aimutta decided to take diksha. The young boy said but Gautam Swami said "We can not give dikshah without consent of his parents". Aimutta returned home and informed his parents. His parents made all efforts to dissuade him from his plan but boy was confident. Parents started explaining that what you know about diksha? Than the boy started explaining that any person who has taken birth in this world will surely die one day, but when and where no one knows it.

Alternately every living being takes birth in four categories of religions that every one knows. But why he is born in that categories that no one knows. Dear parents I want to know the every answer of all the questions, so please give me permission to take diksha. At last his parent gave their consent to becoming sadhu. The boy Aimutta now became Aimutta sadhu.

One day Aimutta Muni was accompaning the old muni into the forest, he saw young boy making small boats out of leaves and floated on a water in puddle. Muni was fascinated and began to play the same. The old muni said, "Oh, Muni! What are you doing? What a great sin you are committing! The Aimutta muni heard and repented his action and stopped playing. The old muni approached the Lord in the Samavasaran and said "The Aimutta Muni has committed mistake. When can he attain Moksha?" The Lord advised young muni to do 'Iriyavahiyam' for his error. The young muni did "Iriyavahiyam" with such deep devotion that he attained Kevalgyan.Later he Preached many people and gone to moksha.

Moral : Children ! 1) We should follow our religion from childhood age.
2) We shold be ready to accept mistakes.
3) We shold respect peoples who point out our mistakes.

1 The Ascentik Aimutta / बालमुनि अइमुत्ता

1 The Ascentik Aimutta / बालमुनि अइमुत्ता

बालमुनि अईमुत्ता

पाँच-छ साल के बालुडे की बात है। उसका नाम अइमुत्ता था, उसको खेलने का बहुत शोख था। फिर भी उससे ज्यादा धर्म का शोख है, खेलते खेलते धर्म करने की बात आए तो खेल को छोडकर धर्म करने लगता है। एक बार महोल्ले के अंदर सब बच्चे इकट्ठे होकर खेल रहे थे, उसके साथ अइमुत्ता भी खेल रहा था। खेलते खेलते उसकी नजर सफेद कपडे वाले साधु भगवंत पर गिरी और उनको लेने के लिए सामने गया। गुरु महाराज को विनंती करके अपने घर पर लेकर गया और खूब भावपूर्वक खुदने वहोराया। वहोराते समय खाने का एक भी दाना नीचे न गिरे उसका पूर्ण ध्यान रखता था, वो जानता है वहोराते समय नीचे दाना गीर जाए तो फिर साधु भगवंत उसके घर से अन्य चीज नहि वेरते। साधु भगवंत को वहोराने के लिए घर पर बुलाना चाहिए और वहोराने के बाद महोल्ले या उपाश्रय तक छोडने जाना चाहिए वह श्रावक का कर्तव्य है, वो भी जानता था! इसलिए गौतमस्वामी के साथ चलकर छोडने के लिए जा रहा था।

उस समय गुरु भगवंत के पास गोचरी का वजन ज्यादा देखकर अइमुत्ता पात्र पकडने के लिए मांग रहा था, गौतमस्वामीने कहा, दीक्षा लेने के बाद ही पात्रे पकडने के लिए मिलते है, उस बात को सुनकर अइमुत्ता दीक्षा लेने के लिए तैयार हो गया। घर पर जाकर माँ की आज्ञा लेने गया, माने कहा बेटा तु दीक्षा को जानता नहि है, अइमुत्ताने कहा : माँ! जो मे जानता हु उसे नही जानता, और नही जानता उसे जानता हु। जिसने जन्म लिया है वो अवश्य मरेगा वो जानता हुं, किन्तु कब, कैसे और कहा मरेगा वह नहि जानता हुं। जीव कोनसे कर्मो से वह चारो गति मे उत्पन्न हो रहा है वो नहि जानता, परंतु कर्मो से ही चारे गति में उत्पन्न हो रहा है वो मे जानता हुं। पुत्र की ऐसी वैराग्यपूर्ण बात सुनकर माता-पिता आश्चर्य चकित हो गये।

बेटे दीक्षा लेना मीण के दांत से लोहे के चने चबाने जैसी बात है... एसे अनेक प्रकार से समजाकर रोकने का प्रयत्न कीया। फिर भी पुत्र की दृढता को देखकर आज्ञा दी, अब अइमुत्ता से बालमुनि अइमुत्ता बने।

एक बार अइमुत्ता मुनि स्थविर मुनिओ के साथ स्थंडिल भूमि गया था, तब बारीश के पानी से भरे खड्डे में बच्चे कागज की नाव तीराकर खेल रहे थे, इसे देखकर बालमुनि को भी खेलने की इच्छा हो गई। इसलिए उन्होने अपना छोटा पात्र पानी में तीराने रखा। कागज की नाव से अच्छा वह सबसे आगे तैरने लगा। उसे देखकर बालमुनि अतिप्रसन्न हो गए, मेरी नाव तैर रही है, इत्यादि कहते हुए खुश होकर नाचने लगे। थोडी देर के बाद दुसरे मुनि भगवंत आये, उनकी ऐसी हरकत देखकर उनको उपालंभ दीया और समजाया, हम साधु है, छे जीवों की विराधना छोडी है, पात्र पानी मे खेलाने से अप्काय (पानी) के जीवो की हिंसा होती है, और बहुत पाप लगता है, अइमुत्ता मुनि को उसकी भूल समजाई।

फिर, समवसरण मे भगवान महावीर के पास गए, वहाँ अपने पापो की आलोचना की (प्रायश्चित किया)। इरीयावहिया में पणग दग पद बोलते बोलते अप्काय के जीवो को खूब भाव से मिच्छामि दुक्कडम् दीया और पाप के पश्चात्तापरुपी अग्नि से घाती कर्मो जलकर राख हो गये और बालमुनि को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। फिर भविजीवो को बोध देकर अंत में मोक्ष में गये।

बोध : बच्चो !
१) छोटी उम्र से धर्म करना सिखो ।
२) भूल हो जाय तो उसका तुरंत स्वीकार करो, पश्चाताप करो और फीर भूल न हो उस का ध्यान खे।
३) अपनी भूल जो दिखाए उसका उपकार मानो ।

Helpful Saint

Hindu Mythology is the mythology of saints. Every part of the Indian soil is capable of creating peace, penance and patience. One who is helpful to other by taking all the pains to known as a saint. This is example of such Indian Saint.

Once a Saint would move from place to place and provide religious knowledge to people. He was calm and simple by nature. Once he came to a village, where the environment was calm. The saint therefore like the temple in that environment and therefore started living there. He worshipped the God over there each & every day. He always prayed to god that everything should happen good to each & everyone. The saint was calm by nature but the people of the village were not calm. The people were bad people and always created problems for others.

One who likes to make others suffer is a nature a bad people. Bad people do not have faith in others. Therefore the people thought this saint to be fake. Therefore the people always gave him bad words while passing from the temple. But the saint was calm and intelligent and kind. Therefore used to listen the bad words calmly. He was never angry. He never spoken bad words calmly. He was never angry. He never spoken bad words. Therefore the people got tired as the saint never replied to their comments & bad words. Bad people enjoy only when they are replied. Enjoyment increase only when reply increases so if a person doesn't reply then there is no enjoyment and there with tiredness comments are stopped. This is the nature of Bad people. (Even you can try). Saint was calm as even and people came to the Saint with surprise and asked "Hey, Saint we given you Bad words and then also you don't get angry and even you do not reply with Bad words.

Saint said with laughter: If you give me Rs.100 and I do not take them then Rs.100 is with whom.

People said : It stays with us only.

Saint said : If you give me Bad words and I do not accept them then the Bad words stay with whom? People could not answer this question. Now understand that giving Bad words spoils our face only. Our Bad words stays with us only. It is applicable to us only. People felt guilty about their mistake. They asked for forgiveness in front of the Saint.

And decided that they would not haras anyone further.

They took oath that they would not tell Bad words to anyone.

They became the followers of the Saint and thus cleaned their life.

Moral : Children ! If someone harases you, do not get angry. Do not take the Bad words of others and do not speak bad words.

Gajsukamal Muni - Angara was placed on his head,

Khandak Muni - Skin was teared off from the entire body.

Disciples of Khandak Muni - The harasser turn their body into pieces in Ghani then too all of them were greatful to the harassers since it helped them to overcome their Sins (Paap) so always be greatful to the one who harasses you.

2 Help full Saint / उपकारी संत

उपकारी संत

हिन्दु संस्कृति वो संतो की संस्कृति है, हिन्दुस्तान की भूमिका कण कण शांति-साधना एवं सहनशीलता का सर्जन करने के लिए समर्थ है। स्वयं सहन करके भी दुसरो का कल्याण करे वो संत कहलाते है। एसे ही एक हिन्दुस्तान के हिन्दु संत की बात है।

एक संत महात्मा दूर दूर देशांतर विचरते, तीर्थयात्रा करते और लोगो को धर्म संस्कार का उपदेश देते है। वे स्वभाव के सरल एवं शांत थे, एकबार वो एक गाँव के पादर मे पहुँचे। वहाँ कुदरती शांतमय वातावरण था, और वहाँ एक मंदिर भी था। महात्माजी को मंदिर प्यारा लग गया। इसके कारण वहाँ रहने लगे, वो भगवान की पूजा-भजन-कीर्तन करते थे, ये संत वास्तव में भगवान के भक्त थे, गाँव का, जगत का सदाय कल्याण हो वैसी भगवान को प्रार्थना करते थे । गाँव का कुदरती वातावरण शांत था, किन्तु गाँव के लोक शांत नहि थे। वह सब दुष्ट, दुर्जन थे। दुसरे को हेरान-परेशान दुःखी करना वह दुर्जन का स्वभाव है, दुष्टो को किसी के पर भी विश्वास नहि होता है, इसलिए गाँव के लोग इस संत को भी ठग मानते थे और मंदिर के पास से गुजरते समय़ लोग रोज रोज संत पर गाली बरसातेथे। लेकिन संत तो शांत, सहिष्णु और समजदार थे, दयालु थे, इसलिए गाँव के लोगो की गालीयाँ शांति से सुन लेते थे। उन पर गुस्सा नही करते थे। हृदय मे वैरभाव भी रखते नही थे, और सामने गाली नहि देते थे। इसलिए बिना कारण रोज रोज ग़ाली देनेवाले गाँव के दुष्ट जन अंत मे थक गए, कंटाले और शांत हुए।

दुर्जनो को भी सामने से प्रतिभाव मिले तो ही परेशान करने का मजा आता है। आनंद आए तो ज्यादा परेशान करे, किंतु मानव हैरान ही न हो तो फिर कंटालकर परेशान करना बंद करते है। ये दुर्जन का जीवन का नियम है। (आप भी अपने जीवन में प्रयोग किजीए) महात्मा शांत ही रहे तो गाँव के लोग थककर कौतुक से महात्मा के पास आए। महात्मा को प्रणाम कर के प्रश्न पूछा : महात्माजी हम आपको रोज रोज गाली देते है तो फिर भी आप गुस्सा क्यों नहि करते हो? आप हम को गाली क्यु नही देते?

संतने मुस्कराकर कहा - सुनो ! आप मुजे सो रुपये दो और मे वो सौ रुपये को न लु तो वो रुपये किसके पास रहेंगे? गाँव के लोगोने कहा हमारे पास रहेंगे।

संत फिर से बोले : आप मुझे गाली दो और में वो गाली को न लू तो वो कीसके पास रहेगी? गाँव के वो दुर्जनो जवाब दे न सके, समझ गये, गाली देने से तो हमारा ही मुख अपवित्र होता है। हम सबने दी हुई गाली तो हमारे पास ही रही। वो गाली तो हमारे को ही लगती है, ऐसे समजकर सब शरमिंदा हो गए। खुद की भूलों का पश्चाताप करने लगे। संत के चरण में पडकर बारबार क्षमा याचने लगे। अभी किसी को परेशान नहि करने का संकल्प लिया।

जीवन में कभी भी किसी को गाली नही बोलने की प्रतिज्ञा की ।

संत के परम भक्त बन गए, स्वयं की गंदी जिंदगी सुधार दी।

बोध : बच्चो ! कोई भी परेशान करे तो भी गुस्से नही होना, कोई भी व्यक्ति आपको गाली दे तो उसको लेना नही। (सामने जवाब नही देना) हमारे को किसी को गाली नही देनी।

गजसुकुमार मुनि के सिर पे अंगारे रखे, खंधकमुनी की संपूर्ण शरीर की चमडी निकाल दी, खंधकमुनि के ५०० शिष्यो को घाणी में पीले फिर भी वह महात्माओ दुःख देनार को उपकारी मानते है। दुःख दीया तो ही हमारे कर्मो/पाप खपे। इसी तरह वो मानते थे।

है ना जिनशासन का सत्त्व! आपको भी कोई परेशान करे तो उसको आप उपकारी मानोगे ना?

Known elements to be Jain

1. What is the place of Birth and Nirvana of Bhagwan Mahavir?

a) Mithila Nagari / Sammetshikhar b) Hastinapur / Vaibhargiri
c) Kshatriyakund / Pavapuri d) Champapuri / Pavapuri

2. What is the second name of Logassa?

a) Shakrastav b) Namastav
c) Chaityastav d) Siddhstav

3. What is Lanchan of Suparshwanath?

a) Sathiyo b) Lotus
c) Crocodile d) Monkey

4. Who is the composer of 1444 granth?

a) Sidhasen Diwakar Suri b) Munisundar Suri
c) Haribhadra Suri d) Mantung Suri

5. What is the number of Aashatna in care of Temple?

a) 72 b) 80
c) 84 d) 70

6. What is the colour of Charitra Pad?

a) White b) Rato (Red)
c) Pilo (Yellow) d) Lilo (Green)

7. Who help the blind parents?

a) Vastupal b) Shravan
c) Eklavya d) Bharat

8. How many Gods are there at present

a) 24 b) 20
c) 11 d) 108

9. What should you do when you see a Saint?

a) Namo Jinanam b) Mathen Vandami
c) Namaskar d) Hi

10. What is the time of Samayik?

a) 24 min b) 48 min
c) 44 min d) 50 min

11. Who got the designation of Kalikal Sarvagna?

a) Bappbhatt b) Yashovijay
c) Udayratna d) Hemchandracharya

12. Who made 1.25 crore Jinbimb and 1.25 lakh Jin Mandir?

a) Vastupal-Tejpal b) Jagdusha Sheth
c) Samprati Maharaja d) Anand Shravak

तत्त्व जाणकर जैन बनो

१. **भगवान महावीर का जन्म एवं निर्वाण कहाँ हुआ था?**
   अ) मिथिलानगरी - सम्मेतशिखर   ब) हस्तिनापुर - वैभारगिरि
   क) क्षत्रियकुंड - पावापुरी   ड) चंपापुरी - पावापुरी

२. **लोगस्स सूत्र का दुसरा नाम क्या है?**
   अ) शक्रस्तव   ब) नामस्तव
   क) चैत्यस्तव   ड) सिद्धस्तव

३. **सुपार्श्वनाथ का लांछन कौन सा है?**
   अ) साथिया   ब) कमल
   क) मगरमच्छ   ड) बंदर

४. **१४४४ ग्रंथो की रचना कौन से गुरु भगवंतने की है?**
   अ) सिद्धसेन दिवाकर सूरि भ.   ब) मुनिसुंदर सूरि भ.
   क) हरिभद्रसूरि भ.   ड) मानतुंग सूरि भ.

५. **देरासर संबंधि कितनी आशातना है?**
   अ) ७२   ब) ८०
   क) ८४   ड) ७०

६. **नवपद के अंदर चारित्र पद का वर्ण कौन सा है?**
   अ) सफेद   ब) राता
   क) पीला   ड) लीला

७. **अंधे माँ-बाप की सेवा एवं यात्रा किसने कराई?**
   अ) वस्तुपाल   ब) श्रवण
   क) एकलव्य   ड) भरत

८. **अभी वर्तमान में कितने भगवान विचर रहे है?**
   अ) चोबीस   ब) बीस
   क) इगियारा   ड) अेकसो आठ

९. **साधु भगवंत रास्ते मे मिले तो दो हाथ जोडकर क्या बोलना चाहिए?**
   अ) नमो जिणाणं जिय भयाणं   ब) मत्थेण वंदामि
   क) नमस्कार   ड) प्रणाम

१०. **सामायिक कितने मिनिट का होता है?**
   अ) २४ मिनिट   ब) ४८ मिनिट
   क) ४४ मिनिट   ड) ५० मिनिट

११. **कलिकाल सर्वज्ञ ऐसा बिरुद किस गुरु भगवंत को मिला है?**
   अ) बप्पभट्टसूरि म.   ब) यशोविजयजी म.
   क) उदयरत्न विजयजी म.   ड) हेमचंद्रसूरि म.

१२. **सवा करोड जिन बिंब एवं सवा लाख जिन मंदिर किसने बनवाए थे?**
   अ) वस्तुपाल-तेजपाल   ब) जगडुशा शेठ
   क) संप्रति महाराजा   ड) आनंद श्रावक

Monk Kurgadu

In ancient times, there lived a businessman named Dhandatta, who was highly religious. He also raised his son to be very religious. Once Dharmaghosh-suri, the highly enlightened Acharya of that time, came to the town where Dhandatta lived. Dhandatta took his son to listen to his sermon. The boy was so impressed by the Acharya's sermon that he decided to become his disciple. Accordingly, he renounced worldly life and became a monk at a very young age. The Acharya realized that the boy had tremendous potential to be a great Jain monk. He therefore renamed him Kurgadu. In the native language of that area he came to be known as Kurgadu.

Kurgadu studied the holy books and correctly comprehended their essence. He realized the role of Karma in the life of every being and thereby learned to maintain a high level of equanimity. He rigorously observed the code of conduct for monks. However, he could not overcome one problem. It was difficult for him to stay hungry and so he could not fast. He needed to eat at least once a day. Even during Paryushan Parva he could not fast even for a single day. As he ate his food on the days of Parva, he felt miserable and regretted that he was not able to fast.

The Actual name of Monk was Nagdatta, but everyone use to call Kurgadu and make mockery of it. (Kur=Rice, gadu = Pots) Shudhavedniya Karma was so terrible that he use to feel too hungry. In previous bhav he was snake. He was the son of Kumbha Raja's Queen. At a time when Nagdatta came Nagdevta came in the dream of Queen therefore his name was Nagdatta. At a time of teenage, he was sitting in Rajmahal he saw a Monk passing through Mahal he thought about it and become capable of taking diksha he took permission from mother and father and took diksha. And became Nagdatta Muni.

. He use to feel very hungry. He did not had an ability to do Tap. He use to eat only Rice to kill apetite. At a time of paryushan there were 4 monks in their groups. 1st monk had 1 months fast. 2nd monk had 2 months fast. 3rd monk had 3 months fast. 4th monk had 4 months fast, but Nagdatta Muni cannot do even a single day fast. He brought rice from Shravak house and showed to Guru Maharaj and other Monks. He told other monks "if you have any desire you can share it with me". "Please give me such an opportunity". Other monk in an arrogant manner spited oesophagus on the rice he lated the rice assuming oesophagus as ghee. At a time of lating he thought "I am so, unfortunate that I can't do even one fast in paryushan. At that time he gained keval-gyan other monk also felt bad that they had done wrong with Nagdatta Muni. He regret all those obstacles that they was giving to Nagdatta Muni and gained keval gyan.

Moral :Children ! 1) Praising is one kind of religion negligence is one kind of non-religion. Never criticize or show anger.

2) The penance (religious activities like tap, dharm) at we are unable to do there help the one who does it and praise him.

3) Forgiveness is one such Big religion. Allways forgive one and all.

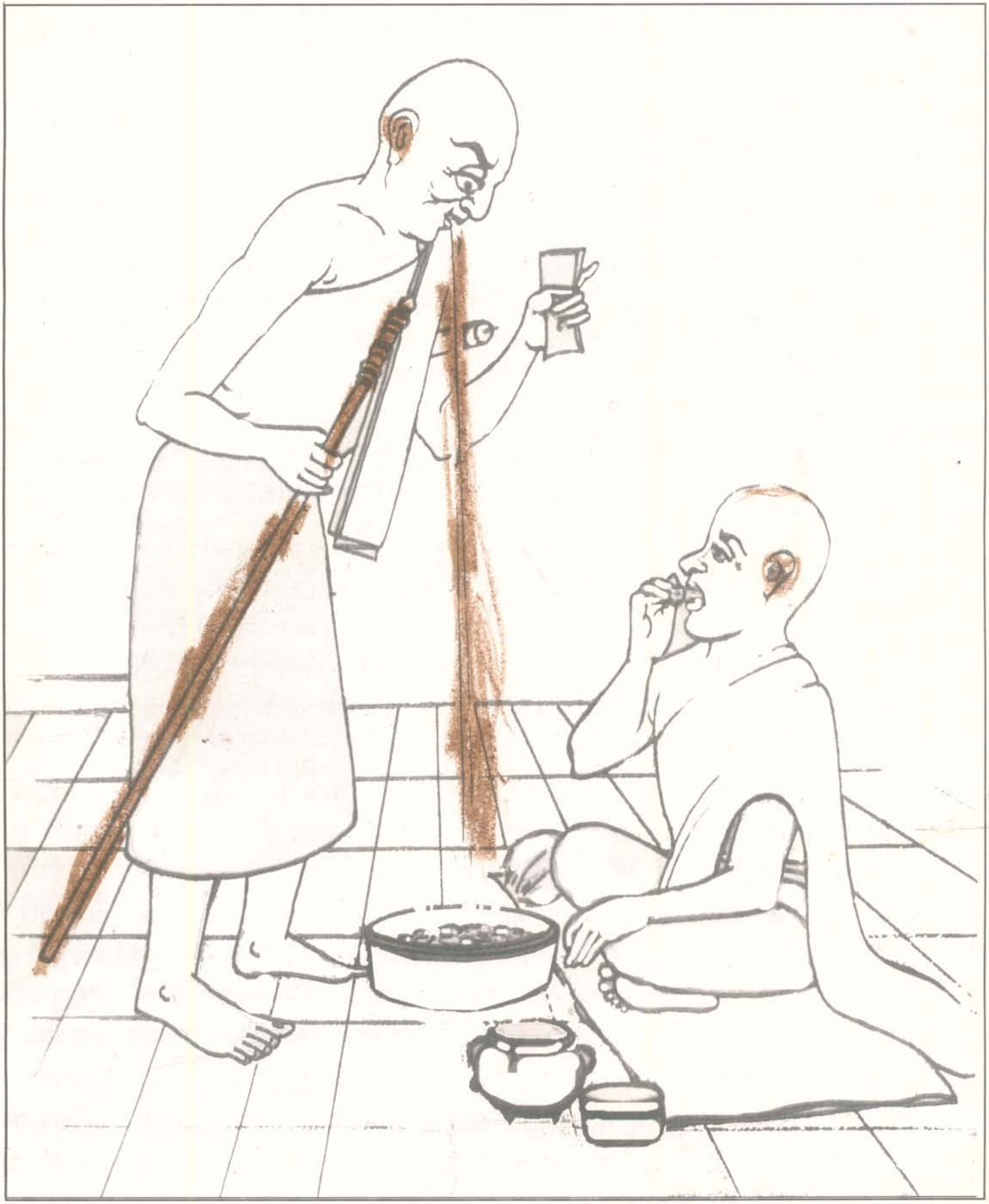

3 Monk Kurgadu / मुनि कुरगडु

3 Monk Kurgadu / मुनि कुरगडु

मुनि कुरगड्डु

मुनि का नाम नागदत्त था, परंतु उनको कुरगड्डु कहकर सब मश्करी करते थे। कुर = चावल, गड्डु = गगरी, मटका। क्षुधावेदनीय कर्म का तीव्र उदय के कारण उनको भूख ज्यादा लगती थी। पूर्व भव में सर्प के भव से आये थे। कुंभराजा की रानी उसके उदर में आते समय नागदेवता का स्वप्न आया था। उसके कारण उनका नाम नागदत्त रखा था। युवा अवस्था में राजमहेल के झरोखे में बैठे थे, तब कोई मुनि को देखकर आत्मचिंतन करने से वैराग्य हुआ। माँ-बाप की आज्ञा लेकर दीक्षा ली और नागदत्त मुनि बने।

बहुत भूख लगने के कारण वो पर्व के दिन भी छोटा तप भी कर नही सकते थे। इसलिए ज्ञानी गुरुने उसे कहा था हे वत्स! तु एक मात्र क्षमा का पालन कर, उससे तु सर्व तप का फल प्राप्त करेगा, मुनि को खाने-पीने की लालसा नही थी, मात्र भूख को संतोष ने के लिए माल-मिष्टान को छोडकर स्वाद बीना के तुच्छ चावल लाकर आहार करते थे, सुबह में घडा भर के चावल (कुर) लाकर वापरते (खाते) तब उनको शांति होती थी, इसलिए लोक में उनका नाम कुरगडु पडा था।

उनके साथ चार तपस्वी थे, एक साधु महिने के उपवासी थे, दुसरे साधु दो महिने के उपवासी थे, तीसरे साधु तीन महिने के उपवासी थे, चौथे चार महिने के उपवासी थे, ये तपस्वी साधु कुरगडु मुनि की रोज निंदा करते थे, कुरगडु मुनि रोज उन तपस्वीओं की अनुमोदना एवं सेवा में तत्पर रहते थे।

एकबार संवत्सरी महापर्व के दिन कुरगडु मुनि अपनी तीव्र भूख को शमाने के लिए गोचरी में भात वहोरकर (लेकर) लाए, गोचरी लाने के बाद साधु की सामाचारी है की गुरु को गोचरी दिखाना और दुसरे साधुओ को उपवास होने पर भी उनको विनंती करना। इस अनुसार कुरगडु मुनि गोचरी गुरु भगवंत को दीखाकर तपस्वीओ को विनंती की। आपकी जो भी इच्छा हो, थोडा सा मुजे लाभ दो। ये शब्द सुनते ही तपस्वीओ को गुस्सा आया और कहने लगे 'इतने बडे पर्व के दिन भी आप आहार करते हो' आप तिरस्कार पात्र तो हो ही और दुसरो को वापरने के लिए कह रहे हो। इसलिए अति धिक्कार पात्र भी हो ऐसा कहकर तपस्वीओने मुनि के पात्र में थूका।

कुरगडु मुनि थुक को घी समजकर शांत चित्त वापरते वापरते विचार रहे है, में कैसा अभागी हुं जो इतने बडे पर्व के दिन भी तप नही कर सकता हुं। जो तपस्वी है, उनकी सेवा-वैयावच्च करनी चाहिए उसकी जगह मे उनके मन में गुस्सा जगानेवाला बना, साधु बनने के बाद भी मैंने कीतनी बडी गलती की।

इसी तरह दुगुच्छा किये बिना आहार वापरते और आत्मनिंदा करते करते शुक्ल ध्यान मे मग्न होकर कुरगडु मुनि को वही केवलज्ञान प्राप्त हुआ। देवो ने उनका महिमा कि। उस प्रकार देखकर चारो तपस्वी विचारने लगे हकीकत से ये मुनि ही भाव तपस्वी है, हम उपवास करके द्रव्य तपस्वी है, हम सब ने उनकी विराधना की, इस प्रकार विचारते कुरगडु केवली को क्षमापना कर रहे है, मन-वचन-काया की शुद्धि से खमाते उन चारो को उसी समय केवलज्ञान प्रगट हुआ, पृथ्वी पर विचरकर पांचे केवली भगवंत मोक्ष मे गये।

बोध : बच्चो ! १) अनुमोदना यह धर्म है, तिरस्कार यह अधर्म है, किसी का भी तिरस्कार, धिक्कार एवं निंदा न करें।

२) जो धर्म (तप-अभ्यास-आराधना) हम सब न कर सकते हो वह यदी दुसरे करते हो तो उनकी सेवा करो, अनुमोदना करो।

३) क्षमा धर्म महान धर्म है, दरेक जीव को क्षमा दो ।

A wonderful method to change a sinful man

A beautiful Mahavir Swami's temple was made at Somchand Sheth's house. The murti which was there in his house. War of a gemstone which at that time cost approximately one lakh rupees.

Everyday there was one man who use to come to do darshan at his house and would even darshan of this gemstone murti. This man had one bad habit and that was he used to gamble. One day he lost one lakh rupees in gambling and now he had to pay this money to the money lenders. He thought a lot and then he remembered the murti of the God.

Next day he came to do darshan and at that time Somchand Sheth was just leaving to go out of the temple. This man was waiting for a chance and as soon as he got a chance he put the gemstone murti inside his bag. Somchand Sheth very smartly saw the whole incident by standing outside the door. Somchand Sheth left and told the watchman "that the man who is inside as soon as he comes outside tell him to come to my house for food", he said that much and left for his home.

As soon as the man came out the watchman took him to the mans house. Sheth welcomed him very nicely and made eat a very lavisly.

After he ate his food Sheth told him that whatever you have done today is not at all a good. As soon as he listened to Somchand Sheths talk he trembled. He begged to Sheth and said that I have done a mistake and I am sorry for it please forgive me. He told Somchand Sheth that I had lost one lakh rupees in gambling and tommorrow I have to pay the amount that why I get the idea of doing this. But next time I will never do such a mistake.

Sheth said you should have told me this before then you would not even get an idea to rob the murti.

Sheth soon counted and gave the man one lakh rupees. The man was astonished that he was such a kind man - He repented for his mistake and started crying.

What a kind heart of Somchand Sheth against a thief.

"What a love with a common man!"

Moral :Children ! never shout at a sinful man otherwise his mistake will be never corrected. First you should give love to the sinful man and love will automatically change his mistake or stop him from doing sin.

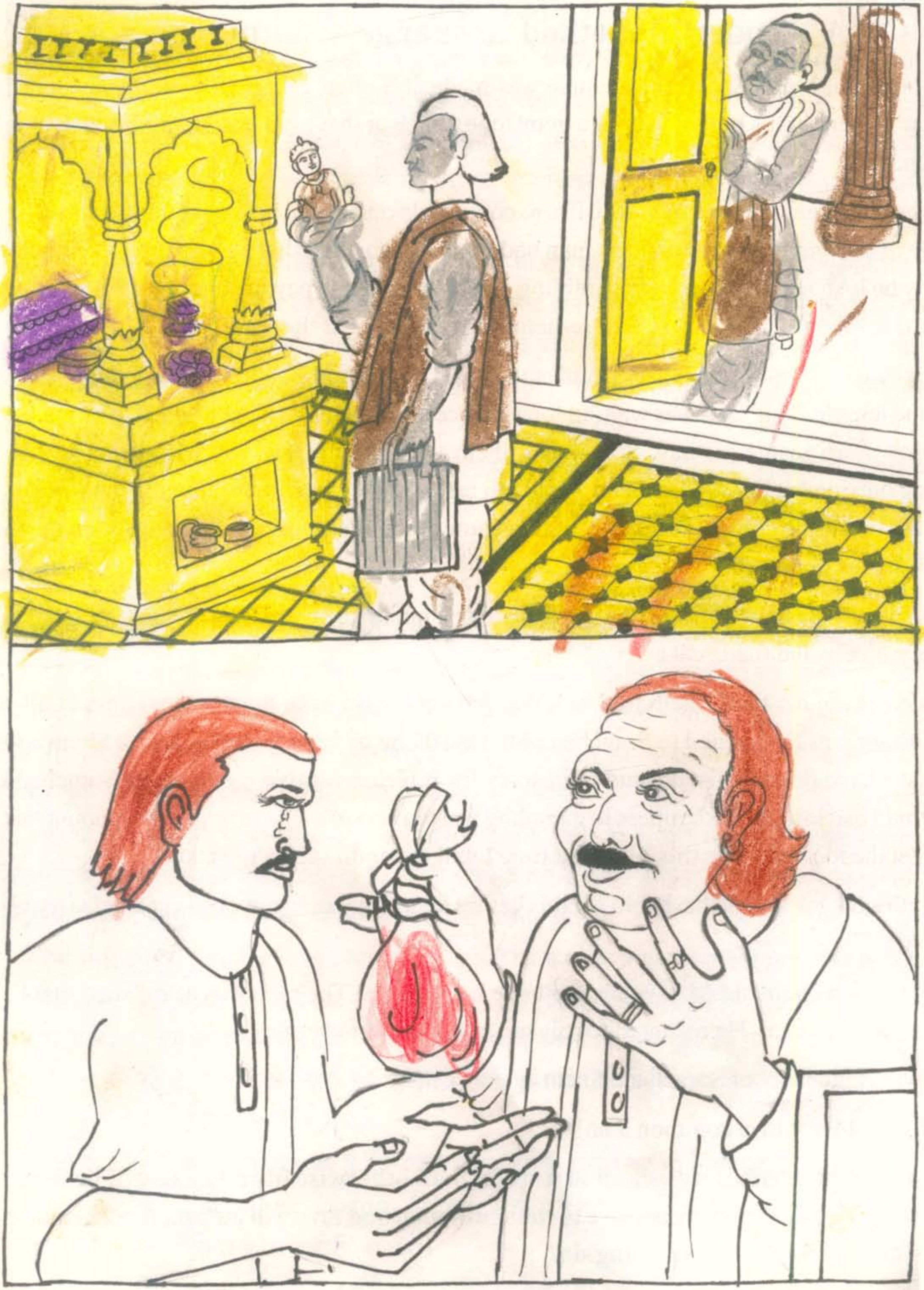

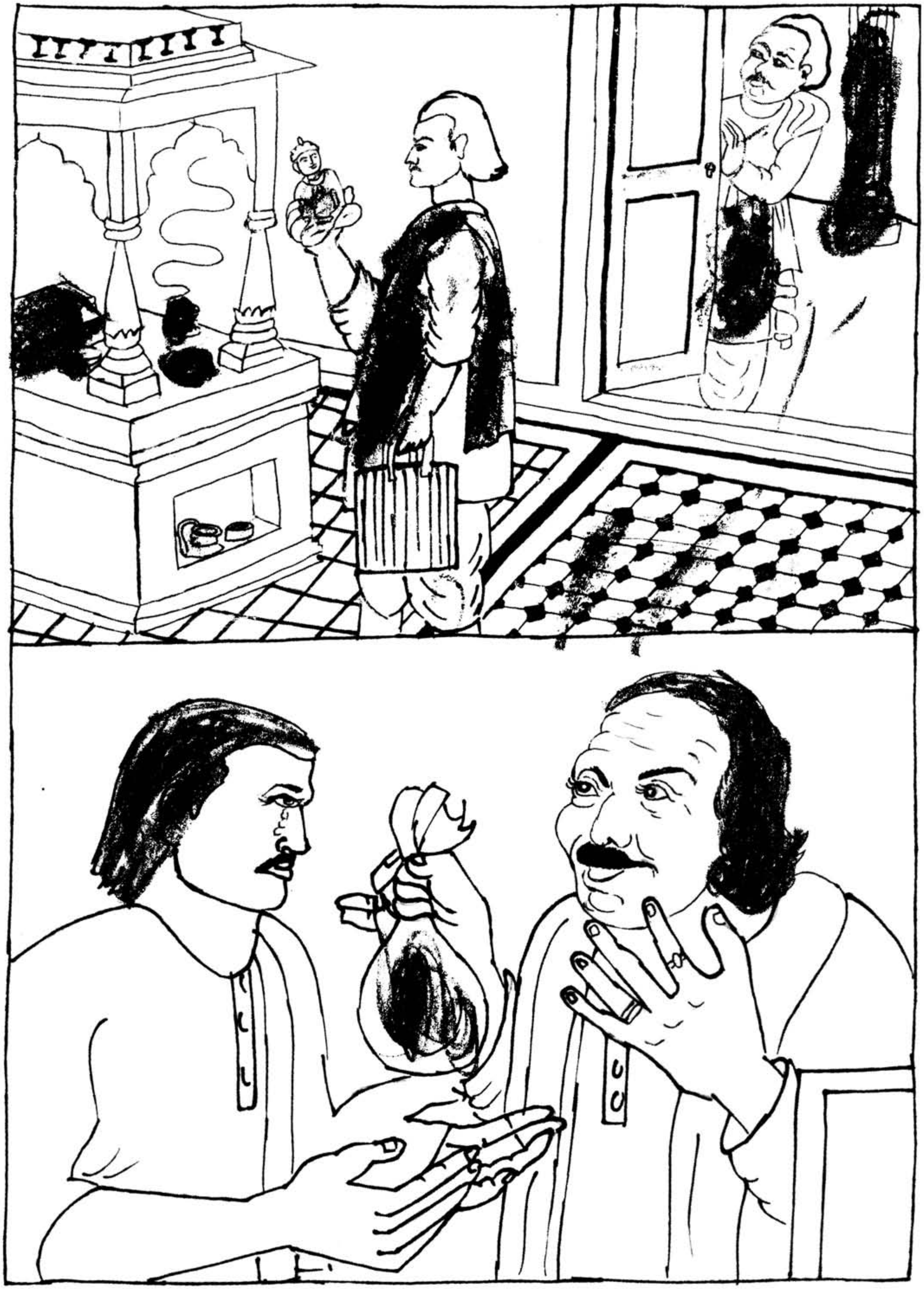

4 A Wonderful method to change a sinful man / पापी को सुधारने का अनोखा तरीका

पापी को सुधारने का अनोखा तरीका

सोमचंद शेठने अपने घर में भगवान श्री महावीर का खूब अच्छा गृह जिनालय बनाया था, करोडो रुपयो के मालिक शेठ को भगवान महावीर के उपर अत्यंत बहुमान एवं भक्ति थी। उनके गृह जिनालय में एक रत्न की प्रतिमा थी, जिनकी किंमत उस जमाने मे लाख रुपये थी।

एक आदमी इस शेठ के गृह जिनालय मे रोज दर्शन करने के लिए आता था, वो हंमेशा इस रत्न को प्रतिमा का दर्शन करता था, किंतु इस भाई की बुरी आदत ये थी की वो सट्टा (जुगार जैसा) खेलता था। एक दिन ऐसा हुआ की वो भाई सट्टे में लाख रुपये हार गया। अभी लेणदार को किंमत कैसे दे? बहुत विचारने के बाद रत्नवाली प्रभु की प्रतिमा चुराने की याद आई ।

दुसरे दीन सुबह में वो दर्शन करने के लिए आया, सोमचंद शेठ दर्शन कर के बहार निकल रहे थे, इस अवसर का लाभ उठाकर रत्न की प्रतिमा ले ली और झोली में डाल दी । सोमचंद शेठ की चकोर दृष्टी से ये दृश्य छुपा न रहा।

शेठ ने बहार खडा हुआ पहेरेदार को कहा, अंदर गये भाई जैसे बहार आए वैसे तुरंत उनको अपने घर खाने के लिए ले आना। इतना कहकर शेठ घर आ गए।

वो भाई जैसे बहार नीकले की पहेरेदारने उनको तुरंत शेठ के घर पे ले गया, शेठने उस भाई का स्वागत किया और बहुत प्रेमपूर्वक पांच पकवान खिलाए।

खाना खाने के बाद शेठने पूछा मेरे प्यारे बंधु! आज आपने जो कार्य किया, वो बिलकुल ही उचित कार्य नही है, आपको किस लिए ऐसा कार्य किया?

शेठ का प्रश्न सुनकर भाई ध्रुज उठे। उन्होने शेठ को क्षमा मांगते हुए कहा, शेठजी मेरी बहुत बडी भूल हो गई है, मुजे क्षमा कर दो, किंतु सट्टे में एक लाख रुपये हार गया हुं। और कल सब लेणदार को किंमत चुकानी है, इसलिए मुझे प्रतिमा चुरानी पडी। किंतु शेठ, अब मे एसा पाप कभी नही करुंगा ।

शेठ ने कहा, जो आपने मुझे पहेले, ये सब बात की होती तो, तो आपको प्रतिमा चोरने का विचार भी न करना पडता। और शेठ ने उसी समय उस भाई को लाख रुपये गीन के दे दीये। एसी शेठ की महान उदारता देखकर वो आश्चर्य चकित हो गया। उसकी आँख मे से पश्चाताप के आंसु गिर पडे।

ये चोर पे शेठ की कितनी महान उदारता है!

अपने साधर्मिक की तरफ कितना अनोखा वात्सल्य है!

बोध : बच्चो ! दुसरे पापी को कदी धिक्कार ने से उसकी प्रवृत्ति नही सुधरती। पापी को सुधारने से पहेले उसे प्रित करनी पडती है, प्रीत की अनोखी रीत पापी को भी पाप से सचमुच अटका देती है।

प्रिय बच्चे, टाइम के अभाव से बडा धर्म नही हो सकता है, इसलिए ये छोटा धर्म करके पुण्य कमाए। सब से पहले आंखे बंद करो और इस चोरस खाने मे ऊंगली घुमावो और मन में नवकार गीनो, नवकार पूर्ण होते जहां ऊंगली हो वो नंबर कौनसा है वो देखो और बाद में उसे नंबर के उपर लिखा हुआ धर्म आज करो, इसी तरह रोज एक-एक बार करना, वो कार्य करने से अपने कर्म दूर होते है और अपने अंदर गुण उत्पन्न होते है एवं अनंतगुण आए तब भगवान होते है!

बोलो, बच्चो ! आपको भगवान बनना है तो फिर चलो इस गेम के अंदर सामील हो !

3	26	36	42	24	16	31	34	41	18
48	43	50	23	47	60	10	40	5	49
11	27	17	39	20	33	28	44	51	30
31	29	54	19	55	22	52	4	46	12
8	37	13	53	45	15	35	25	7	38
9	58	6	21	59	1	56	2	14	57

Dear Chidrens,

Due to shortage of time we cannot do more religious activities. But here is a game which will help you to do small religious activity.

Staps to play game.

- First close your eyes.
- Put your finger tip on the page.
- Then start counting Marker and more your finger to different boxes.
- As the marker finish stop your finger and see the box number a which your finger stapes.

The activity mentioned on that is to be done by you on that particular day.

So you on play every day and come do different activity every day. Your virtues will develop and you may become God in future. So do you want to be God?

Then you have to play game.

60 Things

1 Bow down to your Parents.
2. Do not eat fluing.
3. Clean the Dish and Drink the water in the Dish.
4. Keep Silence for 1 hour.
5. Do Ashtprakari Pooja.
6. Meditate 108 Navkar.
7. Do not watch T.V. for 1 day.
8. Study 1 Gaatha
9. Drink Boiled water.
10. Do Navkarsi
11. Do Chovihar - Tivihar
12. Clean the Glass in which water were drunk.
13. Do Pratikraman
14. Don't play Video Game
15. Study Religious Books for 1/2 hour
16. Do not listen to songs of picture
17. Do not eat after sunset
18. Bow down to saints.
19. Do Samayik
20. Go to Pathshaala.
21. Do not criticize or insult
22. Do not use computer.
23. Do the work by ownself.
24. Do chaityavandan in Derasar.
25. Do not go to Hotel.
26. Give roti to Dogs
27. Do not show Anger.
28. Do not use water directly, use a cloth while using water.
29. Do not irritate anyone.
30. Don't eat, sit or spit on paper
31. Do not use Bad words
32. Eat whatever food is given
33. Do not tell lies.
34. See and walk with jayna
35. In morning after waking up meditate with Navkar.
36. Do not speak against elders.
37. Go and listen to Vyakhyan
38. Give foods to Saints.
39. 5 Khamasna to religious book.
40. Do not eat kandmul
41. Do not use Mobile.
42. Do not speak in derasar.
43. Do not eat Farsan.
44. Do not sleep on Matleesses (Gadla)
45. Do not use Internet
46. Do not use lifts.
47. Do not wear clothes designed with alphabetical words etc.
48. Help the parents for 1/2 hour.
49. Do not criticise anyone.
50. Do not eat while watching T.V.
51. Do not fight with brothers & sister.
52. Do not Theft.
53. Do not drink softdrinks.
54. Do not see here & there in Derasar.
55. Do not eat sweets.
56. Donate to the needed.
57. Do not fight with anyone.
58. Do not speak while eating.
59. Go to temple by walking.
60. Do not travel here & there.

६० चीजे

१. माँ-बाप के पैर छूना ।
२. कोई भी १ चीज नही खाना ।
३. थाली धो कर पीना ।
४. १ घंटे का मौन रखना ।
५. भगवान की अष्टप्रकारी पूजा करना।
६. १०८ नवकार गिनना ।
७. १ दिन टी.वी. नही देखना।
८. १ गाथा करना।
९. गरम (उबाला) पानी वापरना।
१०. नवकारशी करना ।
११. चोविहार - तिविहार करना ।
१२. झुठा ग्लास लुछना।
१३. प्रतिक्रमण करना ।
१४. वीडियो गेम नही खेलना।
१५. आधे घंटे धार्मिक वांचन करना।
१६. पिक्चर के गीत नही सुनना।
१७. रात्रि भोजन नही करना।
१८. साधु भगवंत को वंदन करना।
१९. सामायिक करना।
२०. पाठशाला जाना।
२१. किसी का अपमान नहीं करना।
२२. कम्प्युटर नही वापरना ।
२३. खुद का काम खुद करना ।
२४. देरासर में चैत्यवंदन करना ।
२५. होटल नही जाना ।
२६. कुत्ते को रोटी डालना ।
२७. गुस्सा नही करना ।
२८. बीना छाना पानी नही पीना।
२९. मस्ती नही करना।
३०. कागज पे खाना, बैठना और थुकना नही।
३१. गाली नही बोलना।
३२. रसोई मे जो हो वो खाना।
३३. झूठ नही बोलना।
३४. नीचे देखकर चलना।
३५. सुबह उठकर नवकार गिनना।
३६. वडील के सामने नही बोलना।
३७. व्याख्यान सुनना।
३८. साधु भगवंत को वहोरना ।
३९. ज्ञान के पाँच खमासमण देना ।
४०. कंदमूल नही खाना।
४१. मोबाईल नही वापरना।
४२. देरासर मे बाते नहीं करना ।
४३. फरसाण नही खाना।
४४. संथारे पे सोना।
४५. इंटनेट नही वापरना।
४६. लिफ्ट नही वापरना
४७. लिखे हुए कपडे नही पहनना।
४८. माँ-बाप की आधा घंटे की सेवा करना।
४९. किसी के बारे मे खराब नही बोलना।
५०. टी.वी. देखते हुए खाना नही।
५१. भाई-बहन से लडना नही।
५२. चोरी नही करना।
५३. ठंडा नही पीना।
५४. देरासर मे इधर-उधर नही देखना।
५५. मिठाई नही खाना।
५६. गरीब को दान देना।
५७. किसी के साथ झगडा नही करना।
५८. खाने के समय बोलना नही।
५९. पूजा करने के लिए पेदल जाना।
६०. घुमने के लिए नही जाना।

Muni Gajsukumal

This is a story which took place at the time of lord Krishna. He was ruling over Dwarka. Lord Krishna has a younger brother named Gajsukumal who was a follower of Lord Neminath. After hearing the preaching of Lord Neminath Gajsukumal decided that this world is not of worth and leaving like a Sadhu after taking diksha is a very good way. So he decided to take diksha.

Gajsukumal's mother who's name was Devki loved her son a lot so she refused him to take diksha, But Gajsukumal was very sincere for diksha. So his mother allowed him to take diksha. On one condition she said, 'Dear son, Diksha is a very good path, you promise me that you will follow it in a right manner. After becoming Sadhu you will follow every principle of it like a lion without any fear. And you will allow diksha in such a manner that you get moksha easily and I would be you last mother forever.

After hearing his mother's blessing's Gajsukumal approached Lord Shri Neminath and accepted Diksha. After becoming Sadhu he followed the diksha in a very right and appropriate manner.

Once with the permission of Lord Neminath he began to carry medition in a standby statue position. During this time his father-in-law by name Somil was passing from there. As he saw Gajsukumal ?? he got very angry because he thought that this fellow has spoiled life of my daughter by leaving her alone and taking diksha. So he decided to teach him a lesson.

He made a small muddy boundary on muni's head and put burning charcoal into it. The head of muni began to burn, He was experiencing very painful moment by body but muni's heart did not felt pain. He began to think that 'In this world my people get father-in-law but only I have got a father in law who is helping me to wear a painful cap which will take me to moksha.

Gajsukumal muni got kevalgyan (power of complete knowledge) and just then his life also ends. The great muni attained Moksh.

Moral : Children ! We should always carry activities which Leads to our objectives and take act goods things from bad activities.

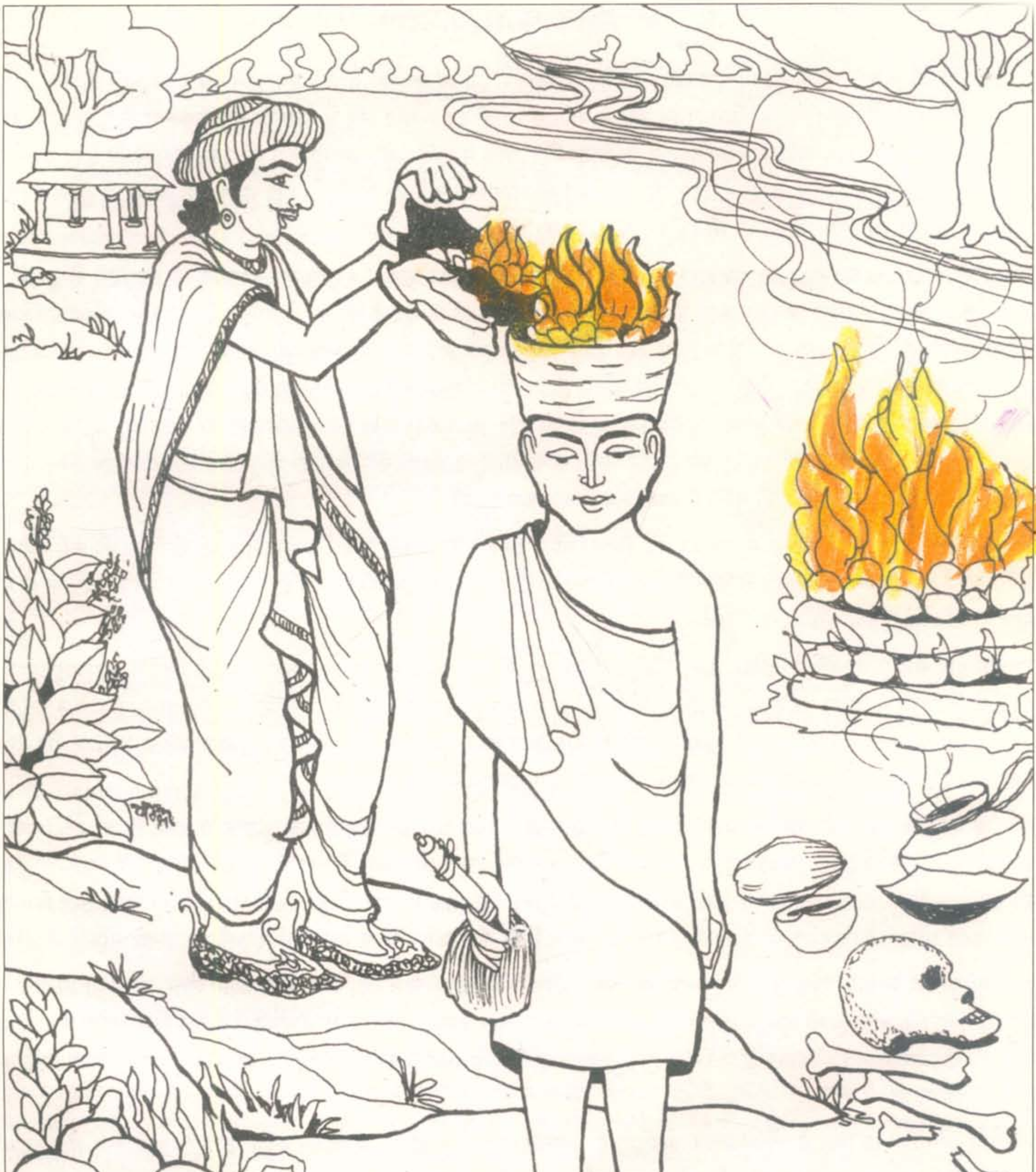

5 Muni Gajsukumal / मुनि गजसुकुमाल

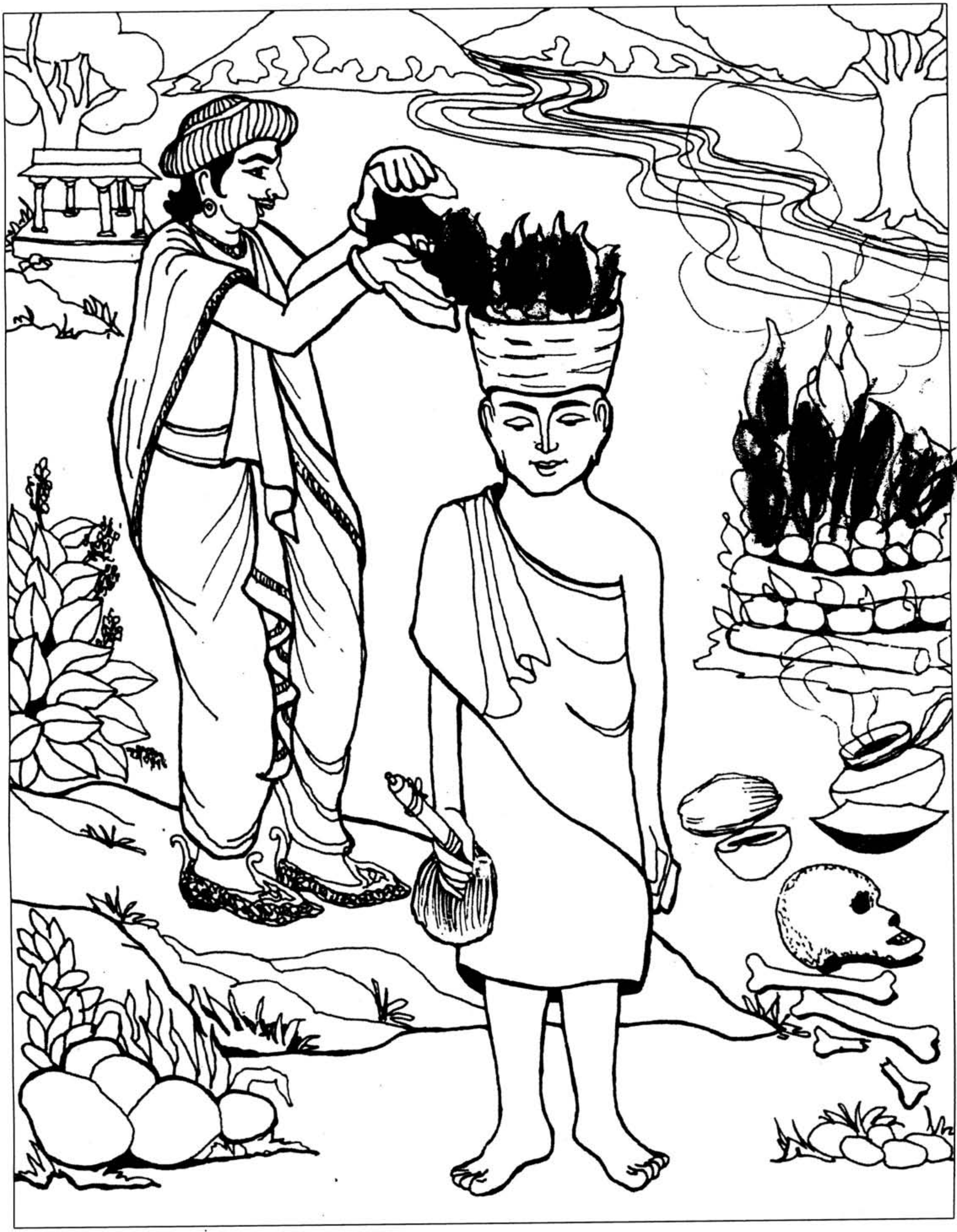

5 Muni Gajsukumal / मुनि गजसुकुमाल

मुनि गजसुकुमाल

वर्षो पूर्व की बात है, कृष्ण की माता देवकी स्वयं के राजभवन में आराम कर रही थी तब एक मुनि युगल धर्मलाभ बोलते, वहोरने के लिए आये। मा देवकीने खडे होकर विनयपूर्वक मोदक वहोराए, थोडी देर के बाद फिर से वैसा हि मुनि युगल वहोरने के लिए आये, माता देवकीने फिर से मोदक वहोराए। उनके जाने के बाद, फिर सोच ने लगी अरे, इन मुनिओ को फिर वहोरने के लिए आने की आवश्यकता क्यों हुई? इन साधुओ को देखकर मुझे पुत्र जैसा वात्सल्यभाव क्यो हो रहा है? इनकी चाल और कांति तो कृष्ण जैसी ही है, अभी तो देवकी इसी तरह सोच रही थी किंतु वही मुनियुगल वहोरने के लिए आए।

देवकी ने स्वयं के मन का समाधान करने के लिए पूछा, तब मुनियुगलने कहा ! माँ हम एक ही माता के एक जैसे छे पुत्र है, छे भाइओने दीक्षा ली है, इसलिए अनुक्रम आने से आपको एक समान लग रहे है, देवकी को मन में ये मुनिओ की ओर अत्यंत प्रेम हुआ। क्या कंस ने मारे हुए मेरे ही छे पुत्र नही है ना? इस बात का समाधान करने के लिए भगवान श्री नेमनाथ के पास पहुंचे। भगवान ने उनके मन का समाधान करते हुए कहा! देवकी! ये छही पुत्र तुम्हारे ही है, हरीणैगमेषीदेव ने लेकर सुलसा को दीये थे। सुलसा तो पालक माता है और तु जन्मदात्री है, इस बात को सुनकर देवकीजी का दु:ख का कोई पार न रहा। छे छे पुत्र होने बावजूद भी मे एक पुत्र का भी वात्सल्य से उच्छेर न कर सकी। दु:खी दु:ख से समय पसार करने लगी। माँ के इस दु:ख को दुर करने के लिए श्रीकृष्ण ने हरिगैगमेषीदेव की आराधना की। उसके प्रभाव से देवकी माता की कुक्षि में गजसुकुमाल का जन्म हुआ।

माताने अत्यंत लाड से लालन-पालन कर बडा किया। योग्य उम्र होते ही विवाह किया। गजसुकुमाल का ध्रुमराजा की पुत्री प्रभावती और सोमशर्मा ब्राह्मण की पुत्री सोमा के साथ विवाह हुआ। अत्यंत सुख शांतिपूर्वक जीवन पूर्ण हो रहा था किंतु मन मे स्वयं के छे भाई के मार्ग पे जाने की इच्छा थी।

एक बार नगर मे भगवान नेमिनाथ आए, राजा और नगरजन के साथ गजसुकुमाल भी देशना सुनने के लिए गये। गजसुकुमाल ने प्रभु की देशना सुनने से वैराग्य दृढ हुआ। मा देवकी और भाई कृष्ण के पास से महामुश्केल से अनुमति प्राप्त की। गजसुकुमाल ने प्रभु पास दीक्षा ली, प्रभु का शरण स्वीकारा । गजसुकुमाल मुनि को मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा थी। भगवान की आज्ञा लेकर दीक्षा के दीन ही वो भयंकर और बिहामणे स्मशान मे अंदर काउसग्गमे लिन हुए। आत्मध्यान मे स्थिर हुए।

ठीक शाम के समय सोमशर्मा ब्राह्मण (ससरा) वहाँ से पसार हो रहा था। उनकी दृष्टि गजसुकुमाल पे गिरते ही क्रोध की ज्वाला धगधगायमान हुई। मेरी बेटी को छोडकर उसने दीक्षा क्यो लि। जो त्याग, वैराग्य था, संयम की हठ थी तो मेरी बेटी को क्यो परणा? स्मशान मे रहे अंगारे देखकर सोमिल का गुस्सा और प्रज्वलित हुआ। तुम्हारे को मोक्ष मे जाने की इतनी ही जलदी है तो मे ही तुम्हे भेज देता हुं। ऐसे कहते सोमिल ब्राह्मणने गुस्से में गजसुकुमाल के सिर पे मिट्टी की पाल बांधकर उसके अंदर ठसोठस अंगारे भरे।

गजसुकुमाल के सिर पे नया मुंडन था, अंगारे की भडभडती अग्निने चमडी जल गई। अभी मांस जलने लगा, शरीर भी जलने लगा, घोर उपसर्ग आने के बावजूद भी गजसुकुमाल मुनिने प्रसन्नतापूर्वक मरणांत उपसर्ग सहन किया और मन में ही मन में सोमशर्मा को उपकारी मान रहे है, क्षमारुपी अमृत की धारा बरसा रहे है, गजसुकुमाल मुनि को भडभड जलते शरीर को देखकर सोमिल ससरा हरखाते हुए नगर की ओर चला गया।

शरीर और आत्मा भिन्न है, ये तो शरीर जल रहा है, आत्मा नहि। ये दु:ख तो अनेकबार सहन कीये है। इसी तरह सोचकर मुनि शुभ ध्यान में मग्न हो गये। प्रसन्नतापूर्वक वेदना को सहन करते हुए मुनि को उसी रात्रि को केवलज्ञान हुआ। देह का त्याग कर अमर हो गए और मोक्ष गये।

बोध : बच्चो ! १) आराधना के संस्कार हो तो कितने भी भोग-विलास हो तो भी वैराग्य होता है। दीक्षा लेने की इच्छा होती है।

२) कितना भी कष्ट कोई भी दे तो फिर भी उनकी ओर दुर्भाव नही होना चाहिए, उपकारी मानना चाहिए।

Rohineya

The most ferocious thief of Rajgrihi, Lohakur, while dying said to his son Rohineya, "Dear son! if you desire that your profession of stealing and robbery should prosfer, you should never listen to the voice of Mahavir. This is my last advice to you."

Lohakur died within a short time and went to 7 th hell as a punishment for his sins. Heeding to the advice given by his father, Rohineya began to keep away from Lord Mahavir if ever he had to pass by the Samavasaran a place where the Lord delivers discourses he walked away closing his ears with his fingers.

Once, a thorn pierced his heel. He took away his fingers from his ear and since just then he was passing near the samavasaran, the words of Mahavir fell on his ears.

Just at that time, Lord Mahavir was delivering a discourse on heavenly beings "Heavenly being are four inches above ground when they are standing their eylids do not shake and thier flower garlands do not fade. They do not perspire "He heard all this and ran away after quickly removing the thorn from his foot. He made efforts to forget the Bhagvan's word but these very efforts made him remember the Bhagwan's words. In other words, he could not forget the Lord words.

King Shrenik and his police office tried to catch hold of him but he could not be caught.

One day, Abhaykumar made a plan to catch him. He ordered his soldiers to stand on the four sides of the city and to catch hold of the thief as soon as he entered the city. This arrangement proved successful. While the thief was going out of the city he was caught by the officers.

But as long as he was not proved to be guilty of commiting the crime how could he be given any punishment? Now what can Abhaykumar do? He could not do anything because the thief did not have with him any stolen articles. When search was made at Shaligram the statement was found to be correct.

But Abhaykumar was not less intelligent. He mixed a very powerful intoxicant called chandrahas in Rohineya's drink that made him unconscious. He retained him in that condition in a palace and created the festive atmosphere and revelry of the heaven.

As soon as Rohineya wake up he saw there a sight which was heavenly in it's splendour and he was stuffied. The pillars, magnificent and made of gold!

Heavenly damsels dancing! With the Gandharvas (celestial) singing songs of great beauty and every one absorbed in great joy and jubilation.

But Rohineya observed that the legs of those heavenly beings were touching the ground and that their eyelids were shaking, their flower garlands had faded and the drops of perspiration could be seen dripping from their bodies. So he concluded that they were not celestial beings. At this point Rohineya remembered the words of Lord Mahavir. He realised that is was a conspiracy hatched by Abhaykumar.

Rohineya then approached the Lord and received from him initiation into the Sadhu Dharma. He carried out such austerities as fasting for six month and many other spiritual austerities. At the end, he carried out a severe austerity called Anshan (fast up to death) and he reached the heaven.

Moral :Children ! Listen to religious discourse at every religious opportunity. It can only benefit you.

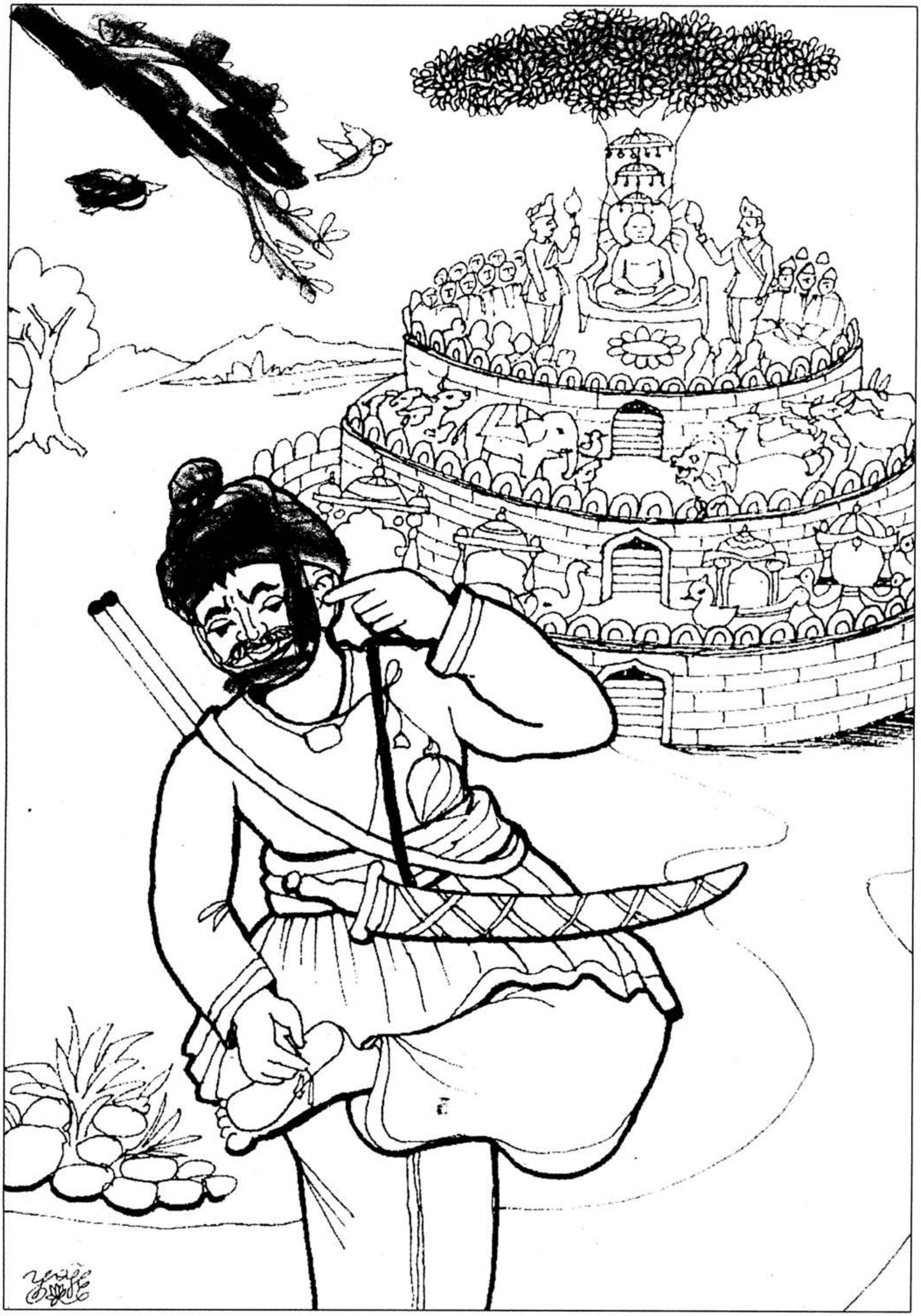

रोहिणियो चोर

वैभारगिरि की गुफा में भयंकर दुष्ट चोर रहता था। उसका नाम लोहखुर और उसके बेटे का नाम रोहिणिया था, मृत्यु के अंतिम समय पे बापने बेटे से कहा की 'तु कभी भी भगवान श्री महावीर का धर्म उपदेश सुनना मत। भगवान देवो के द्वारा निर्मित समवसरण में बैठकर देशना देते है, इसी तरह कहकर लोहखुर लुंटारा मर गया। रोहिणया ने बाप को दीया हुआ वचन का बराबर अनुकरण कर रहा था। रोहिणीया लुट करने के लिए जाता तब कभी समवसरण भी बीच में आजाता था, जब समवसरण आता तब एक भी शब्द कान में न सुनाई दे इसलिए दोनो कान में अंगुली खोसकर शीघ्र से चलकर दूर जाता था।

एक बार इसी तरह कान में अंगुली खोसकर दोड रहा था क्योंकि भगवान की वाणी सुनाई न दे इसलिए गति से चल रहा था। हमने कितने भी प्लान बनाए हो, फिर भी कुदरत को वो सब स्वीकार नही होता। वो जब शीघ्र से चल रहा था, तब पाव के अंदर तीक्ष्ण कंटक लग गया, उसके कारण वो शीघ्र से चल ना सका। इसलिए एक हाथ की अंगुली कान में रखकर दुसरे हाथ की अंगुली से तीक्ष्ण कंटक निकालते समय भगवान श्री महावीर प्रभु की वाणी का मधुर वचन सुने गए। भगवान! देवो का वर्णन कर रहे थे। देवो के चरण कभी भी जमीन पे स्पर्श नही होते, आंख कभी भी पलकारा नही मारती, उन्हो ने पहीनी हुई माला कभी मुरझाती नही है, देव का परछाया होता नही है, कान से सुने हुए इस वचन से रोहिणया खूब दु:खी हुआ, पिताजी के अंतिम समय पे लि हुई प्रतिज्ञा का भंग होने से खूब दु:खी हुआ। उस स्थिति मे शीघ्र से कान में अंगुली डालकर भाग गया। और विचार करने लगा की वाणी सुनने से प्रतिज्ञा भंग नही होती, किंतु मनमें वो वाणी को याद रखे तो ही प्रतिज्ञा भंग होती है।

रोहिणीये चोर का बडा त्रास था। फिर भी उसको कोई पकड नही सकता था। एक बार अभयकुमार मंत्रीने रोहिणीये चोर को पकडा। किन्तु उसके पास कोई पुरावे नही थे। इसलिए दंड-सजा कैसे की जाए? अभयकुमारने उसके मुख से बुलाने के लिए एक तरकीब लगाई। उसको अधिकतर दारु पीलाकर बेहोश किया फिर कृत्रिम (जूठा) देवलोक में उसको सुलाया। दारु का घेन उतरने के बाद इन्द्रपुरी जैसा दृश्य देखकर आश्चयचकित हो गया। देव-देवीओ उसकी सेवा करने लगे और पूछने लगे हे स्वामीजी। आप देवलोक मे आये हो, इधर सब से प्रथम शुभ-अशुभ कृत्यो का पाप-पुण्य का हिसाब करने का आचार है फिर दैवी सुख जीवनभर मिलेंगे ।

जो भुलना चाहिए वो भूल नहि पा रहा था, इस कहावत के अनुसार रोहिणीये को भगवान की वाणी याद आई की देव के पेर नीचे नही स्पर्शते है, ये तो जमीन पे चल रहे है, आंख पलकारा मारती है, परछाया पड रहा है, रोहिणिये को पता चल गया की ये सब नाटक है, इसलिए उसने कहा मेरा संपूर्ण जीवन सत्कर्मो मे ही परिपूर्ण हुआ है, मैने खूब धर्म कीया है, मैने जीवन में कभी भी पाप नहि कीया है।

समय का लाभ लेकर रोहिणिया छूट गया। अभी वो विचार कर रहा है प्रभु की दो पल की वाणी ने मुझे फाँसी की सजा से मुक्त किया। भगवान के वचन कितने हितकारी है, इसलिए प्रभु के पास जाकर वंदन कर श्रेणीक राजा के पास अपराधो की कबुलात की एवं चोरी से इकट्ठा किया हुआ माल परत किया और प्रभु के पास दीक्षा ली।

बोघ : बच्चो ! आप भी प्रभु की वाणी-व्याख्यान श्रवण किजिए तो आपका भी जीवन अच्छा बनेगा ।

बच्चो ! आपके जीवन मे संशोधन के अंदर आपका दीमाग चले इसलिए ये चित्र दिया हुआ है।

यहाँ दिया हुआ जंगल का चित्र एकदम विशाल एवं गीच है, उसके अंदर एक भेड, एक मेंडक, एक कुत्ता, तीन पक्षी, एक छोटी पेन्सिल और एक आइस्क्रीम कोन गुम गया है। आपकी चालाकी एवं तेजस्वी बुद्धि से नीकलाकर रंग भरो।

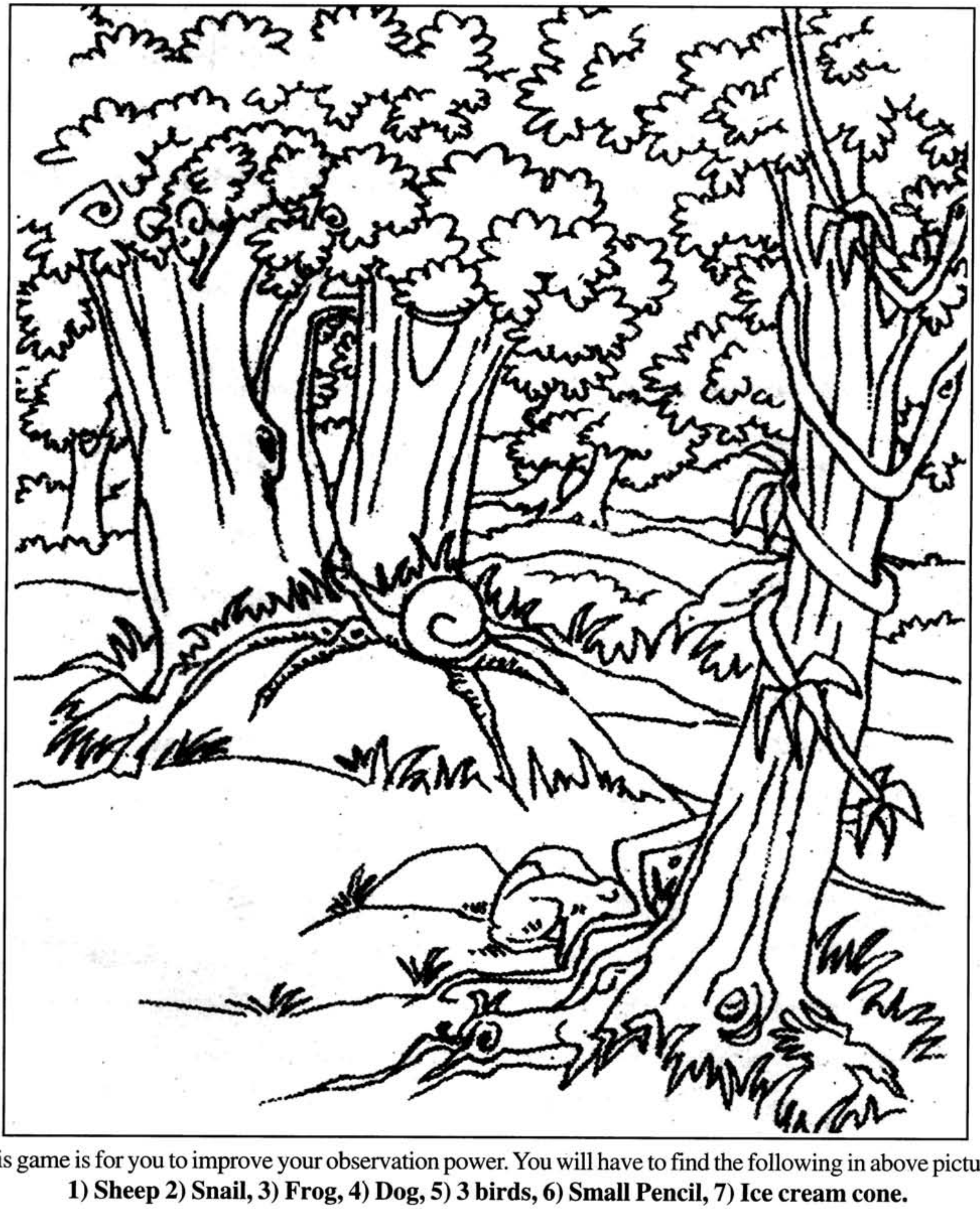

This game is for you to improve your observation power. You will have to find the following in above picture.

1) Sheep 2) Snail, 3) Frog, 4) Dog, 5) 3 birds, 6) Small Pencil, 7) Ice cream cone.

Please fill colours as you find all pictures.

Help Jainam to find her house and also colour this lanchan जैनम घर का रास्ता भूळ गया है उसे रास्ता दिखाकर हाथीके अंदर रंग भरो ?

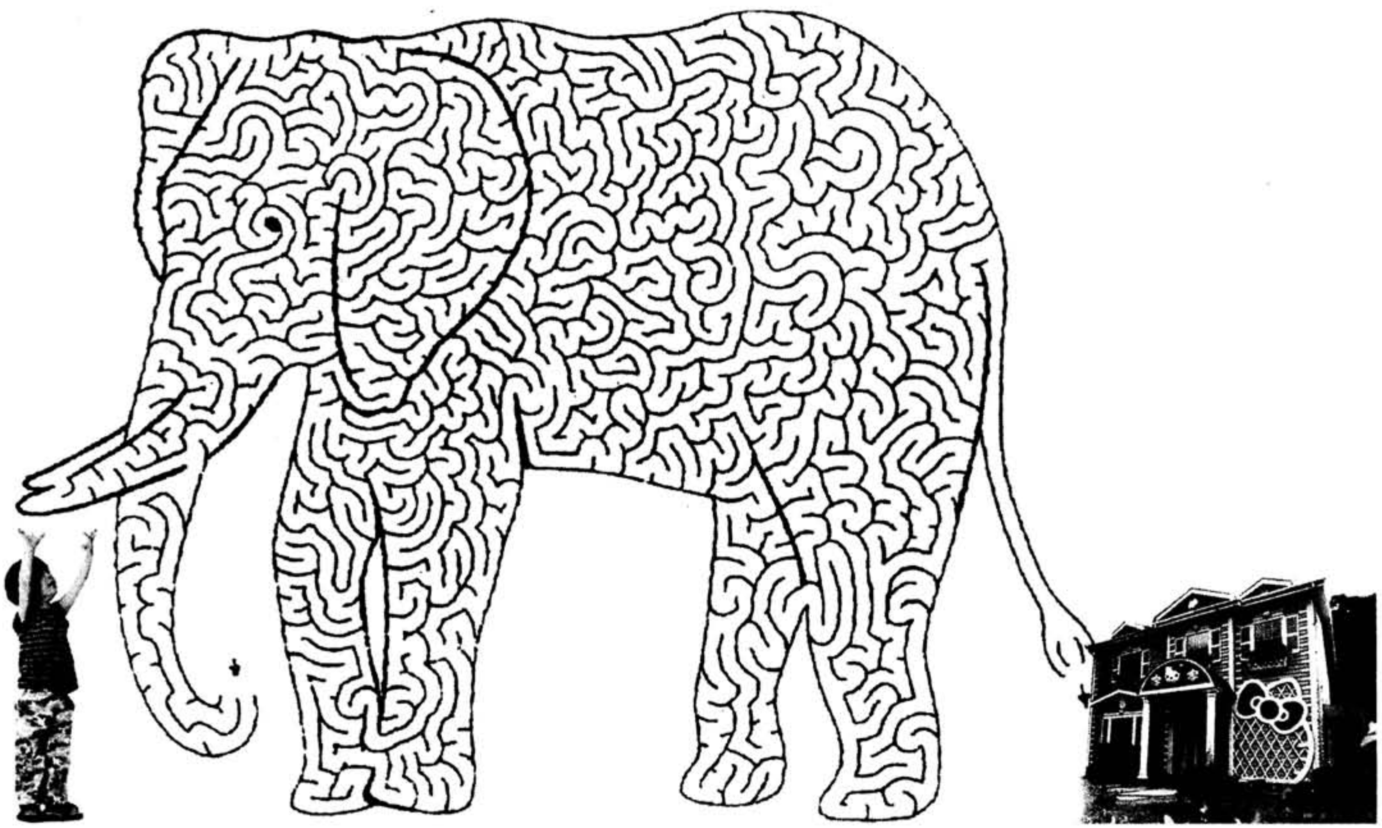

1 Elephant is the lanchhan of which Tirthankar Bhagwan________________

कोनसे भगवान का लांछन हाथी है?

2 Where they were born ________________

भगवानका जन्म स्थल कोनसा है ?

3 Their father's name was________________

उनके पिताजी का नाम क्या है?

4 Their colour was ________________

उनका वर्ण कोनसा था ?

5 They occupied which number of place among 24 Tirthnkar____________

२४ तीर्थंकर में कोनसे नंबर के भगवान है ?

6 Their mother's name was ________________

उनके माँ का नाम क्या है ?

7 They lived for how many years ________________

उनका आयुष्य कितना था ?

8 They attained Nirvana at ________________

उनका निर्वाण कहा हुआ था?

What will not stay permanent?

Anything which is not permanent

- We should not like things which are not permanent.
- We should not dislike the things which are not permenent.
- We should not do sin for these temporary things.

Which things will not stay permanent?

1) Health is not permanent.
2) Relationship is not permanent.
3) Property, money etc. is not permanent.
4) House never Remarks
5) Age of person is not permanent.
6) Human Body is not permanent.

- Sorrow and happiness, both are temporary.
- They are like Water bubbles. (finish in short times)
- These all things are like evening, So They will not stay permanent.
- Happiness is temporary don't cheer it, Sorrow is temporary don't get fear from it.

Be happy with what you have!

Related Questions

1) Which things do not stay permanent?
2) Explain the nature of happiness and sorrow?
3) What to do with the things which are not permanent?

क्या कायम नहि रहेगा ?

जो कायम नहि टीकनेवाला है,

उस पर राग नहि करना चाहिए ।
उस पर द्वेष नहि करना चाहिए ।
उस के लिए पाप भी नहि करना चाहिए।

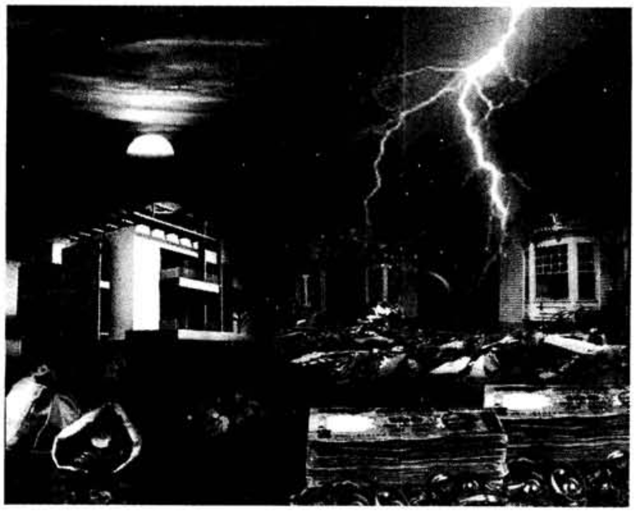

क्या क्या कायम नहि टीकनेवाला है ?

१) आरोग्य कायम नहि टीकनेवाला है ।
२) संबंध कायम नहि टीकनेवाला है ।
३) संपत्ति कायम नहि टीकनेवाला है ।
४) मकान कायम नहि टीकनेवाला है ।
५) जवानी कायम नहि टीकनेवाला है ।
६) शरीर कायम नहि टीकनेवाला है ।

सुख क्षणिक है, दुःख क्षणिक है ।
ये सब पानी के बुलबुले की तरह नाशवंत है।
ये सब ढलते सूर्य की तरह नाशवंत है।
ये सब फूल की तरह क्षणभंगुर है।

सुख से फुल नही जाना । दुःख से डर नहि जाना। अनित्य, क्षणिक, क्षणभंगुर, नाशवंत चीजो को पहेचानकर उन पर ममत्व भाव नहि करना । चीज जीव को जीतना दुःखी करता है, उससे ज्यादा चीज पे रहा हुआ ममत्व भाव जीव को ज्यादा दुःखी करता है।

प्रश्नः-१) क्या क्या कायम नहि टिकनेवाला है? २) सुख-दुःख किसकी तरहा नाशवंत है ?
३) जो कायम नही टीकनेवाला उसपे क्या नही करना चाहीए ?

Oh ! Wonderful Money... Money... Money...

- ***Money is not beautiful, but everyone likes it.***
- ***Money don't have hands, but it works every where.***
- ***Money don't have legs, but it reaches every where.***
- ***Money don't have Tounge, but it is heard every where.***
- ***Money is not a bread, but it serves food to everyone.***
- ***Money don't have stomach, but everyone tries to fill it.***
- ***Money is not beggar, but all people acts like a beggar for money.***
- ***Money is not donation, but everyone donates it.***
- ***Money makes you smile, while money makes u cry.***
- ***Money helps in living, while it also helps in killing.***
- ***Money makes life, while it also kill.***
- ***Money is not god, but it is worshipped every where.***
- ***No one wants to leaves money, but they always leave their total Money.***

अहो आश्चर्य ! रुपिये रुपिये रुपिये

- रुपिये को रुप नही, किंतु चाहते है सब ।
- रुपिये को हाथ नही, किंतु काम करता है सब ।
- रुपिये को पाँव नही, किंतु पहोंचता है सब जगह ।
- रुपिये को जिह्वा नही किंतु आवाज है सब जगह ।
- रुपिये चारा नही किंतु जिलाता है सबको ।
- रुपिये पेट नहि किंतु पूर्ण करता है सब जगह ।
- रुपिये भिक्षा नही है, किंतु मांगते है सब ।
- रुपिये दान नही है किंतु दान देते है सब।
- रुपिये हसाता है और रुपिये ही रुलाता है ।
- रुपिये तारते भी है और रुपिये मारते भी है ।
- रुपिये से अधिकतर तीरजाते है, और अधिकतर मर जाते है ।
- रुपिये भगवान नही है किंतु पूजते है सब डुबजाते है ।
- रुपिये छोडना नही चाहते कोई किंतु छोड जाते है सब ।

1 Alas ! one who knows the Price of Watch doesn't know the Price of Time.

अफसोस! घडी का मूल्य जाननेवाला वक्त का मूल्य नही जानता ।

2 There is no disease like Birth and no Sorrow like Needs.

जन्म जैसा कोइ रोग नही है, ईच्छा जैसा कोइ दु:ख नही है ।

3 The main thing for Property is not wealth but satisfaction.

सुख का मूल संपत्ति नही किंतु संतोष है ।

4 In a lifetime, how much you study is not important but how much you implement is important.

आप जीवन में कीतना पढे वो किंमती नही है किंतु आपके जीवन मे कितना उतरा वो किंमती है ।

5 Implement the order and not argument.

आज्ञा में अमल ही होता है तर्क नही ।

KEYS OF HAPPINESS / सुखी होने की चाबीयाँ

1) Respectfuly touching feet of Mummy-Daddy always gives happiness. (look all picture in page number 3)
मा-बाप को पेर छुने से सुखी होते है ।
2) Worshiping God always makes happy.
भगवान की पुजा करने से सुखी होते है ।
3) Jaap-Dhyan makes you wealthy.
जाप-ध्यान करने से सुखी होते हैं ।
4) Working for elders gives happiness.
वडिल की सेवा करने से सुखी होते है।
5) Taking care of small-big beings makes you happy.
छोटे-बडे जीवो की रक्षा करने से सुखी होते है ।
6) Hearing the Prachings makes a wealthy.
व्याख्यान सुनने से सुखी होते है ।
7) We should give money or food to beggers.
भिखारी-गरीब को दान देने से सुखी होते है ।
8) We should visit our religious places.
तीर्थो की यात्रा करने से सुखी होते है ।
9) Going to religious schools leads to success.
पाठशाला जाने से सुखी होते है ।
10) Always speak truth.
सत्य बोलने से सुखी होते है ।
11) Always be helpful to everyone.
दूसरो की मदद करने से सुखी होते है ।
12) Always serve foods to monks with great respect.
साधु भगवंत को वहोराने से सुखी होते है ।

Children ! Did you Liked This book ? If you liked it then atleast make your one friend a member of this book. Form is on next page of this book.

KEYS FOR UNHAPPINESS / दु:खी होने की चाबीयाँ

1) Not giving respect to parents makes unhappy. (टाइटल नंबर ३ पे चित्र देखो)
मा-बाप का अविनय करने से दु:खी होते है ।
2) Quarreling with friends leads to unhappiness.
बच्चों के साथ झगडा करने से दु:खी होते है ।
3) Proving someone wrong falsely is very bad.
खोटा इन्जाम देने से दु:खी होते है ।
4) Gambling is always punishable.
जुगार खेलने से दु:खी होते है ।
5) We should not eat Bread - Pav etc.
ब्रेड-पांउ खाने से दु:खी होते है ।
6) Robbery is not a good job.
चोरी करने से दु:खी होते है ।
7) We should never speak bad words.
गाली बोलने से दु:खी होते है ।
8) We should not eat prohibited foods like carrot, potato, garlic etc.
कंदमूल खाने से दु:खी होते है ।
9) We should not eat in hotels.
होटल मे खाने से दु:खी होते है ।
10) We should not see movies in theatre.
सिनेमा-पिक्चर देखने से दु:खी होते है ।
11) We should not eat ice-cream, ice etc.
आइस्क्रीम, बरफ खाने से दु:खी होते है ।
12) After sunset, we should not eat anything.
रात को खाने से दु:खी होते है ।

बच्चो ! आपको ये पुस्तिका कैसी लगी ? अच्छी लगी , तो आप कम से कम एक मित्र को इस पुस्तिका का सभ्य बनाए. इसका फोर्म सामने है !

बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

JAINISM WITH ART

कला द्वारा संस्कार सिंचन

(અંગ્રેજી / હિન્દી ત્રીમાસિક સભ્ય ફોર્મ)

નામ : ______________________________

ધોરણ : ______________ ઉ. વર્ષ : ________ મો. નંબર : ______________

સરનામું : ______________________________

____

કઇ પાઠશાળામાં અભ્યાસ : ______________________________

તમારા શ્રી સંઘનું નામ : ______________________________

પાઠશાળાના શિક્ષક / શિક્ષિકાનું નામ : ______________________________

શિક્ષક - શિક્ષિકાના ફોન નં. : ______________________________

વાર્ષિક લવાજમ : રૂા. ૧૦૦/- (દર ત્રણ મહિને એક પુસ્તક પ્રકાશન થશે)

- -

JAINISM WITH ART / कला द्वारा संस्कार सिंचन

નામ : ______________________________

ધોરણ : ______________ ઉ. વર્ષ : ________ મો. નંબર : ______________

કઇ પાઠશાળામાં અભ્યાસ : ______________________________

સંપર્ક લાઇન

ભૂપેન્દ્રભાઇ રાઠોડ
૨૦૧, કુંથુનાથ એપાર્ટમેન્ટ, સર્વોદય નગર,
મુલુન્ડ (વે), મુંબઇ - ૪૦૦ ૦૮૦.
મોબાઇલ : ૯૮૨૦૨૯૩૨૬૯

ધરણેન્દ્રભાઇ શાહ
૭૧૨, ધરતી, ઇન્દ્રપ્રસ્થ કોમ્પલેક્સ,
સત્યનગર, બોરીવલી (વે), મુંબઇ-૯૨.
મોબાઇલ : ૯૮૯૨૫૫૧૫૯૦

ચિંટુભાઇ શાહ
૩૮/૪૦, આશિષ બિલ્ડીંગ, રૂમ નં. ૧૫,
૧લે માળે, બાબુ ગેનુ માર્ગ, મુંબઇ-૨
મોબાઇલ : ૯૩૨૪૪૪૦૧૮૧.

बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

JAINISM WITH ART / कला द्वारा संस्कार सिंचन

બાળકો માટેનું આકર્ષક અનોખું આયોજન (English / हिन्दी त्रिमासिक)

જિનશાસન અનુરાગી શ્રી શિક્ષક / માતાપિતા...

પ્રણામ સાથે જણાવવાનું કે, જિનશાસનના નાના નાના બાળકોના બાલમાનસમાં શાસનની ગૌરવંતી કથા, બોધદાયક, કથાઓનો પરિચય સદાય માટે સ્થિર બની જાય. તે માટે અમોએ આ રંગપૂરણી ચિત્રવાર્તા શ્રેણિનો પ્રારંભ કર્યો છે.

▲ **આ પુસ્તકમાં શું માણશો?**

આ પુસ્તકની અંદર પૂર્વના મહાપુરુષ, મુનિભગવંત તથા બોધદાયક એવી રસપ્રદ કથા જે બાળક વાંચતો જાય અને છોડવાનું મન ન થાય. અને વાર્તા પૂર્ણ થયા બાદ તેની બાજુમાં વાર્તાને અનુલક્ષી તૈયાર કરવામાં આવેલ ચિત્રની અંદર બાળક પોતાના મનપસંદ રંગ પુરે અને એ ચિત્ર અને વાર્તા તેના મનની અંદર કાયમ માટે સ્થિર થઇ જાય.

▲ **પુસ્તકની જરૂરિયાત શું?**

શહેરમાં ૯૦% ઉપરાંત બાળક-બાળીકાઓ કુસંસ્કારના મુખમાં હોમાઇ રહ્યા છે. નાના બાળક ભણવા સિવાયનો સમય બિભત્સ ફિલ્મ, મેગેઝીન, ઇન્ટરનેટ, ગેમ વિગેરેથી પૂર્ણઅ કરે છે. અને હમણાંથી જ આના માનસની અંદર કેવા સંસ્કાર જામશે. આના દ્વારા પોતાનું જીવન બરબાદ કરી નાખે છે. મા-બાપ શિક્ષક એ વિચારવું જોઇએ! આ બધામાં સમય પૂર્ણ કરતો તમારો બાળક શું તમને સાચવશે? મા-બાપને ઘડપણમાં સહારાની લાકડી બનશે? ૫-૭ વર્ષનો બાળક ભવિષ્યનું વિચારી નથી શકતો પરંતુ મા-બાપ શિક્ષક તો સમજે છે ને? આ પુસ્તકની અંદર જીવન ઉપયોગી પ્રતિબોધક અને મહાપુરુષના વાર્તા વાંચી સંસ્કારી જીવન બનાવે.

▲ **પુસ્તક વાંચવાથી લાભ શું?**

આપણા નાના ભોળા અને સરળ બાળકોના માનસ ખૂબ કોમળ અવસ્થામાં રહેલ છે. તેથી હમણાં જે રીતનું વાંચન આપશો તેવા થવાનો પ્રયત્ન કરશે. દા.ત. એને સ્ટોરીમાંથી શિખ્યું કે મા-બાપ, શિક્ષકને પગે લાગવાથી ભણવાનું સરસ અને સરળતાથી આવડે તો. એ પણ પોતાના જીવનમાં પ્રેક્ટીકલ કરશે. અને લાભ દેખાશે જ અને આખી જિંદગી પગે લાગવાનું નહીં ભૂલે. આ રીતે અલગ-અલગ રીતે બાળકના માનસમાં હમણા સંસ્કાર નાખવા અને મારે કેવી રીતે જીવન જીવવું તેનું પણ શીખવા મળશે.

આ રીતે અનેક પ્રકારના લાભો જાણી આ સુંદર પુસ્તક તૈયાર કરવાની ભાવના છે. મીઠાઇમાં જે સ્થાન સાકરનું છે, ફરસાણમાં જે સ્થાન મીઠા (નમક)નું છે. સંસાર જગતમાં જે સ્થાન સંપત્તિનું છે. એ જ સ્તાન પરિવાર સમાજમાં નાના બાળકનું છે. આ વાતને ધ્યાનમાં રાખી આ પુસ્તકમાં ભાગ લેવાનું ધ્યાન રાખજો.

▲ આ પુસ્તક સંપૂર્ણ અંગ્રેજી/હિન્દી ભાષાની અંદર પ્રકાશિત થશે. બંન્ને ભાષા સંયુક્ત રહેશે. (૫-૬ વર્ષના બાળક પણ વાંચી શકે તેવું સરળ અંગ્રેજી લખાણ થશે.)

▲ આ પુસ્તક દર ત્રણ મહિને પ્રકાશિત થશે. (જાન્યુઆરી-એપ્રિલ-જુલાઇ-ઓક્ટોબર)

▲ દરેક પુસ્તિકા ફુલ સાઇઝની રહેશે. વાર્તાની સામે તેના લાઇનીંગ ચિત્ર આવશે તેમાં બાળક પોતાની ઇચ્છાનુસાર જ્યારે પણ સમય હોય ત્યારે પોતે મનપસંદ રંગ પુરી પોતાની કલાને વિકસાવશે.

▲ જ્ઞાન-કલાના વિકાસ સાથે સમયનો સદ્ઉપયોગ તથા સંસ્કાર સિંચનનો ત્રિવેણી સંગમ.

▲ આ પુસ્તિકા પોત-પોતાના એડ્રેસ પર આવી જશે.

▲ કોઇ વ્યક્તિને આ પુસ્તક નાના બાળકોને પ્રભાવના માટે આપવી હોય તો પહેલેથી નીચેના સ્થાને જાણ કરવી પડશે.

▲ બાલ માનસ વિકાસ યોજનામાં તમારી પાઠશાળામાં બાળકોના માતા-પિતાને સમજાવી વધુને વધુ સભ્યો બનાવવા વિનમ્ર વિનંતી.

એજ લી.

બાળકોના ઉત્સાહ માટે, બાળકના જન્મદિવસ કે શુભ કાય। નિમિત્તે બાળકોનો ફોટો મૂકી શકાય તેવી પણ યોજના કરેલ છે. જેની અંદર બાળકનો નાનો ફોટો તથા નામ, લખી શકાય. આ ફોટા વર્ષની અંદર પ્રકાશિત થતી પુસ્તકોમાં આવશે ! આ ફોટો મુકવાનો નકરો એક ફોટા દીઠ ૫૦૦૦રૂા. રાખેલ છે. ફોટાઓ વહેલા તે પહેલાના ધોરણે લેવાશે.

પૂર્ણાનંદ પ્રકાશન
ભુપેન્દ્રભાઇ રાઠોડ
૨૦૧, કુંથુનાથ એપાર્ટ મેન્ટ,
સર્વોદય નગર મુલુન્ડ (વેસ્ટ)
મુંબઇ - ૮૦. મો. ૯૮૨૦૨૯૩૨૬૯

KEY OF HAPPINESS
सुखी होने की चाबीयाँ

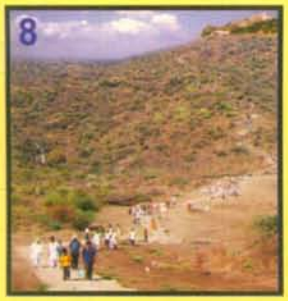

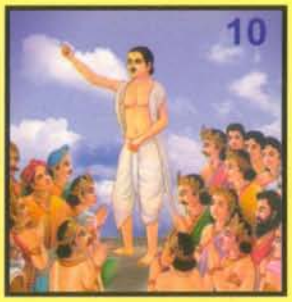

KEY OF UNHAPPINESS
दुःखी होने की चाबीयाँ

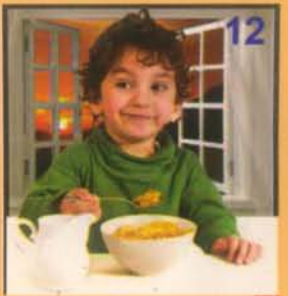

संस्कार सहयोगी Sanskar Sahyogi

Karan Nayanbhai Shah (Waslkeshvar))

Tanish Bhupendrabhai Rathod (Mulund)

Aagam Vaibhavbhai Desai (Mulund)

Jinashi Zaveri (Waslkeshvar))

Shanaya Sohilbhai Shah (Waslkeshvar))

Mokshvi Rupeshbhai Shah (Waslkeshvar))

Saloni Pareshbhai Shah (Mulund)

Ronika Rameshbhai Shah (Mulund)

Priyanshi Zaveri (Waslkeshvar))

Manishaben Dineshbhai Shah (Waslkeshvar)

Pushpaben Nagjibhai Nisar (dadar)

Shri Govalia Tank Jain Sangh
Shri Navjivan Jain Sangh

Sumanbhai Kanchanbhai Shah
(Waslkeshvar)
Gyan Sahyogi - By Himanshubhai
(Mulund)

Gyan Sahyogi- By
(Waslkeshvar)

बालक के उत्साह के लिए बालक के जन्मदिन या शुभकार्य निमित्ते बालकका फोटा रखवा शकते हो, वर्ष दोरान प्रकाशित होने वाली तमाम बुकमें फोटा आएगा केवल ५,००० रुपियेमें एक फोटो आएगा। संस्कार सहयोगी का आया हुआ अवसर चुक न जाए उसका ध्यान रखे।

प्यारे बच्चो ! इस पुस्तकके अंदर वार्ता, गेम, अमृतवचन, आदि आपको भेजना हो तो जलदसें प्रकाशनके कोईभी एड्रेस से भेज सकते हो !

Printed Mater

Serving JinShasan
219500
gyanmandir@kobatirth.org

पूर्णानंद प्रकाशन
भुपेन्द्रभाई राठोड, २०१, कुंथुनाथ एपार्टमेन्ट, सर्वोदय नगर, मुलुन्ड(वेस्ट) मुंबई-८०. मो. ९८२०२९३२६९.

RAJUL 25010056